ROJGAR PUBLICATION
ANKIT BHATI SIR

Rojgar Coaching Center

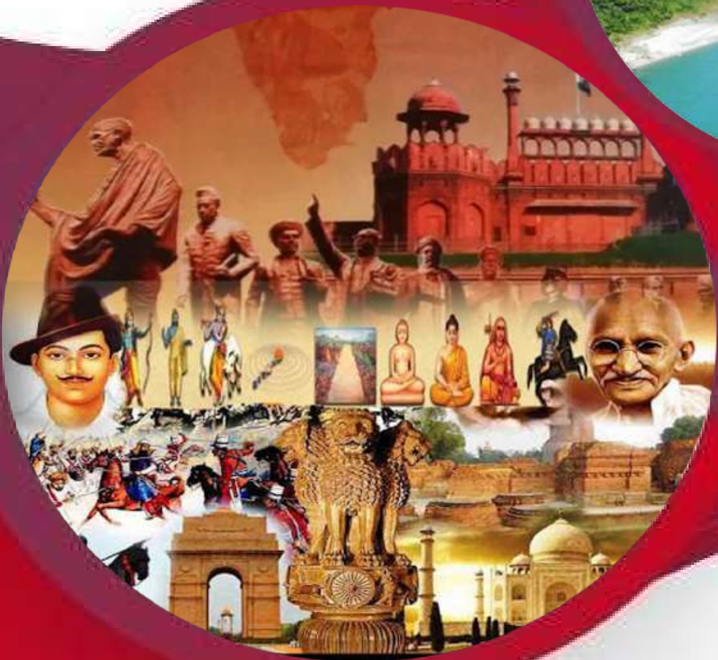

G.S. सुधा

लेखक

नवीन शर्मा सर

❒ प्रकाशकः

Rojgar Publication

Bilaspur, Greater Noida,
Gautam Buddha Nagar,
U.P. 203202
Mobile : 9818489147

E-mail: rojgarwithankit@gmail.com

❒ **नवीनतम संस्करण**

❒ **ISBN- 978-81-985968-5-7**

❒ © **सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन**

भारतीय कॉपीराइट के अंतर्गत इस पुस्तक में समाहित समस्त सामग्री (टाइटिल-डिजाइन, अंदर का मैटर आदि) के सर्वाधिकार 'Rojgar Publication' के पास सुरक्षित हैं। इसके लिए कोई व्यक्ति/संस्था/समूह इस पुस्तक की पाठ्य सामग्री को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर या किसी अन्य भाषा में प्रकाशित नहीं कर सकता। उल्लंघन करने वाले कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार स्वयं होंगे। न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

❒ **Distributor:**

ROHIT GENERAL STORE

Bilaspur, Greater Noida

Mobile : 9557571762, 9266311040

नोटः इस किताब में किसी भी प्रकार के संशोधन या त्रुटि संबंधी आपके सुझाव स्वागत योग्य हैं। इसके लिए आप हमारे WhatsApp नंबर 9311737467 पर संपर्क कर सकते हैं।

श्रीमती सुधा देवी

नवीन शर्मा सर की कलम से ......

प्यारे साथियों नमस्कार,

प्रतियोगी परीक्षाओं की दुनिया लगातार बदल रही है। अब सफलता केवल मेहनत से नहीं, स्मार्ट अध्ययन और सही दिशा से भी तय होती है। इसी दिशा में आपको गाइड करने के लिए 'GS सुधा' पुस्तक लिखी गई है और यह पुस्तक मेरी और आपकी माताजी 'सुधा देवी' को समर्पित है। जिस प्रकार मेरे जीवन को मेरी माताजी ने दिशा देकर इस सफलता तक पहुँचाया है उसी प्रकार यह पुस्तक आपकी तैयारी को नई दिशा देगी और मैं इसे लेकर एकदम आश्वस्त हूँ।

हमने यह पुस्तक आपके लिए इसलिए तैयार की है ताकि आप बिना उलझे, बिना भटके-सटीक जानकारी, सरल भाषा और परीक्षा के लिए एकदम अनुकूल और अद्यतन सामग्री के माध्यम से अपनी तैयारी को मजबूती दे सकें। हमने कोशिश की है कि हर विषय को ऐसे ढंग से समझाया जाए कि चाहे आप पहली बार पढ़ रहे हो या बार-बार पढ़ चुके हों हर बार कुछ नया सीख सकें।

इस पुस्तक की रचना में हमने न केवल परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों का विश्लेषण किया है बल्कि आने वाले ट्रेंड्स और विद्यार्थियों की जरूरतों को भी ध्यान में रखा है।

हमारा उद्देश्य सिर्फ एक किताब देना नहीं था बल्कि ऐसी अध्ययन साथी बनाना था जो हर छात्र के लिए उपयोगी हो चाहे वह गाँव से हो या शहर से।

इस तरह, मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि यह पुस्तक आपकी तैयारी के लिए बेहद उपयोगी साबित होगी। हालाँकि इस पुस्तक को तैयार करने में पूरी सावधानी बरती गई है, लेकिन इसके बावजूद आपके पास इस पुस्तक से संबंधित कोई सुझाव हो तो आप हमें 9311737467 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें। हम उन सुझावों पर अवश्य ध्यान देंगे। अपनी माँ के आशीर्वाद को मैं हमेशा अपने साथ हर समय महसूस करता हूँ।

I am not born with a Silver Spoon
लेकिन वादा है "माँ इतिहास लिखकर जाऊँगा"

शुभकामनाओं सहित,
नवीन शर्मा सर

विषय-सूची

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1. प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन के प्रमुख स्रोत एवं प्रागैतिहासिक काल 00
   - पुरातात्विक स्रोत
   - साहित्यिक स्रोत
   - प्रागैतिहासिक काल
2. सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) 00
   - नामकरण, काल निर्धारण, भौगोलिक विस्तार एवं निर्माता
   - नगर योजना
   - प्रमुख स्थल
   - हड़प्पाई लिपि
   - जीवन की दशाएँ
   - पतन के प्रमुख कारण
   - प्रमुख देन
3. वैदिक सभ्यता 00
   - ऋग्वैदिक काल
   - उत्तरवैदिक काल
4. सोलह महाजनपद तथा मगध साम्राज्य का उत्कर्ष 00
   - सोलह महाजनपद
   - मगध साम्राज्य का उत्कर्ष
   - मगध साम्राज्य के प्रमुख वंश
   - सिकन्दर (यूनानी आक्रमणकारी)
5. प्राचीन भारत के प्रमुख धर्म एवं दर्शन 00
6. मौर्य काल (400 ई.पू. - 200 ई.पू.) 00
7. मौर्योत्तर काल (200 ई.पू. - 300 ई.) 00
8. गुप्त काल (300 ई.पू. - 600 ई.) 00
9. गुप्तोत्तर काल (600 ई.पू. - 700 ई.) 00
10. पूर्व मध्यकाल (750 ई. - 1200 ई.) 00

मध्यकालीन भारत का इतिहास

11. इस्लाम धर्म का उदय 00
12. अरब एवं तुर्क आक्रमण 00
    - महमूद गजनवी
    - मुहम्मद गौरी
13. दिल्ली सल्तनत (1206 ई. - 1526 ई.) 00
    - गुलाम वंश (1206 ई. - 1290 ई.)
    - खिलजी वंश (1290 ई. - 1320 ई.)
    - तुगलक वंश (1320 ई- 1414 ई.)
    - सैय्यद वंश (1414 ई- 1451 ई.)
    - लोदी वंश (1451 ई- 1526 ई.)
    - दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था
14. विजयनगर साम्राज्य 00
    - विजयनगर के शासकों का वर्णन
    - विजयनगर साम्राज्य का प्रशासन, समाज और अर्थव्यवस्था
15. बहमनी साम्राज्य 00
    - बहमनी साम्राज्य के शासकों का वर्णन
    - बहमनी साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं प्रशासन
    - बहमनी साम्राज्य की कला और वास्तुकला
    - दक्कन नीति और दक्षिण भारतीय राज्यों से संबंध
16. सूफी एवं भक्ति आंदोलन 00
    - सूफी सम्प्रदाय
    - भक्ति सम्प्रदाय
17. मुगल साम्राज्य 00
    - बाबर (1526 ई. - 1530 ई.)
    - हुमायूँ (1530 ई.- 1540 ई. तथा 1555 ई.- 1556 ई.)
    - शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)
    - अकबर (1556 ई. - 1605 ई.)
    - जहाँगीर (1605 ई. - 1627 ई.)
    - शाहजहाँ (1628 ई. - 1658 ई.)
    - औरंगजेब (1658 ई. - 1707 ई.)
    - उत्तरवर्ती मुगल
18. मराठा साम्राज्य 00

आधुनिक भारत का इतिहास

19. भारत में यूरोपियनों का आगमन 00
20. बंगाल एवं ब्रिटिश शासन 00
21. मैसूर और ब्रिटिश शासन 00
22. पंजाब और ब्रिटिश शासन 00
23. 1857 की क्रांति 00
24. ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्था 00
25. बंगाल के प्रमुख गवर्नर 00

26. बंगाल के प्रमुख गवर्नर जरनल 00
27. भारत के प्रमुख गवर्नर जरनल 00
28. भारत के प्रमुख वायसराय 00
29. भारत के किसान आंदोलन एवं संस्थाएँ 00
30. भारत में जनजातीय नागरिकता विद्रोह 00
31. ब्रिटिश कालीन भारत की प्रमुख संस्थाएँ/संगठन/सभा एवं आंदोलन 00
32. प्रमुख उपाधि, प्राप्तकर्ता एवं प्रदाता 00
33. प्रमुख व्यक्तियों के उपनाम 00
34. भारतीय स्वतंत्रता से नानियों से संबंधित प्रमुख वचन एवं नारे 00
35. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख अधिवेशन 00
36. प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का तृतीय एवं अंतिम चरण (1919-1947 ई. तक) 00
37. विश्व इतिहास से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य 00

भूगोल

भारत का भूगोल

38. भारत की भौगोलिक अवस्थिति 00
39. भारत की भूगर्भिक संरचना 00
40. भारत का भौतिक स्वरूप 00
41. भारत का प्रायद्वीपीय पठार 00
42. भारत के प्रमुख दर्रे 00
43. भारत के द्वीप समूह 00
44. जलवायु 00
45. मृदा 00
46. प्राकृतिक 00
47. भारत के नेशनल पार्क 00
48. अपवाह तंत्र 00
49. प्रमुख बहुउद्देशीय परियोजनाएं 00
50. जलप्रपात 00
51. भारत की प्रमुख झीलें 00
52. भारत में कृषि 00
53. भारत का पशु संसाधन 00
54. खनिज संसाधन 00
55. परिवहन 00
56. प्रजातियां एवं जनजातीय 00

विश्व का भूगोल

57. ब्रहमाण्ड 00
58. अक्षांश व देशान्तर रेखाएं 00
59. पृथ्वी की आंतरिक संरचना 00
60. चट्टानें 00
61. ज्वालामुखी 00
62. भूकम्प 00
63. पर्वत 00
64. पठार 00
65. मरुस्थल
66. विश्व की प्रमुख नदियाँ 00
67. विश्व की प्रमुख झीलें 00
68. द्वीप 00
69. घास के मैदान 00
70. वायुमंडल 00
- वायुदाब
- वायुदाब पेटियाँ
- पवनें
- चक्रवात

71. जलमण्डल 00
- महासागर
- महासागरीय गर्त
- महासागरीय धाराएँ

72. महाद्वीप 00
- ऐशिया
- अफ्रीका
- उत्तरी अमेरिका
- दक्षिणी अमेरिका
- अंटार्कटिका
- यूरोप
- ऑस्ट्रेलिया

73. विविध 00
- नदियों पर स्थित पत्तन
- तटीय सीमा वाले देश
- महाद्वीपों के प्रमुख पत्तन
- विश्व के प्रमुख देशों/द्वीपों के परिवर्तित नाम
- संसार की प्रमुख जल विद्युत परियोजना

- नदियों के किनारे अवस्थित विश्व के प्रमुख नगर
- विश्व की प्रमुख घाटियाँ
- विश्व के प्रमुख दर्रे
- विश्व की प्रमुख जनजातियाँ
- विश्व की प्रमुख नहरें
- विश्व के प्रमुख जलमरुमध्य
- विश्व की प्रमुख जलसंधियाँ
- विश्व के प्रमुख खनिज उत्पादन
- परिवहन
- विश्व की प्रमुख बंदरगाह

भारतीय राजव्यवस्था

74. भारत का संवैधानिक विकास 00
75. संविधान सभा 00
76. भारतीय संविधान की विशेषताएँ 00
77. संघ एवं उसका राज्य क्षेत्र 00
78. भारतीय संविधान की स्रोत्र 00
79. भारतीय संविधान की अनुसूचियाँ 00
80. भारतीय संविधान के भाग 00
81. प्रस्तावना 00
82. नागरिकता 00
83. मौलिक आधिकार 00
84. राज्य के नीति-निदेशक सिद्धांत 00
85. मौलिक कर्तव्य 00
86. राष्ट्रपति 00
87. उप-राष्ट्रपति 00
88. भारत का महान्यावादी 00
89. नियंत्रण एवं महालेखापरीक्षक
90. संसद 00
- लोकसभा
- राज्यसभा

91. महत्त्वपूर्ण शब्दावली 00
92. संसद की वित्तीय समितियाँ 00
- प्राक्कलन समिति
- लोक लेखा समिति
- सरकारी उपक्रम समिति

93. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद् 00
94. आपात उपबंध 00
95. राज्य की कार्यपालिका एवं विधायिका 00
- राज्यपाल
- राज्य विधानमण्डल
- विधानसभा
- विधानपरिषद्
- मुख्यमंत्री
- महाधिवक्ता

96. न्यायपालिका 00
- सर्वोच्च न्यायालय
- उच्च न्यायालय
- अधिनस्थ न्यायालय

97. स्थानीय स्वशासन 00
- पंचायती राज
- नगर पालिका
- सहाकारी समितियाँ

98. केंद्र-राज्य संबंध 00
99. भारत की संचित निधि 00
100. आकस्मिकता निधि 00
101. केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण 00
102. निर्वाचन आयोग 00
103. राजभाषा 00
104. अन्य राज्यों के संबंध में प्रावधान 00
105. वित्त आयोग 00
106. लोक सेवा आयोग 00
- संघ लोक सेवा आयोग
- राज्य लोक सेवा अयोग

107. राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग 00
108. अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग 00
109. अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति आयोग 00
110. राजभाषा आयोग 00
111. योजना आयोग/नीति आयोग 00
112. राष्ट्रीय विकास परिषद् 00
113. केंद्रीय सतर्कता आयोग 00
114. राष्ट्रीय सतर्कता आयोग 00
115. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग 00
116. राष्ट्रीय महिला आयोग 00

117. लोकपाल और लोकायुक्त 00
118. संविधान के कुछ महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद 00
119. संविधान संशोधन 00

भारतीय अर्थव्यवस्था

120. अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था 00
121. राष्ट्रीय आय 00
122. आर्थिक संवृद्धि एवं आर्थिक विकास 00
123. आर्थिक नियोजन 00
124. कृषि 00
125. उद्योग 00
126. सेवा क्षेत्र
127. गरीबी और बेरोजगारीग 00
128. मुद्रास्फीति 00
129. मुद्रा बाजार एवं बैंकिंग प्रणाली 00
130. अंतराष्ट्रीय आर्थिक संगठन 00
131. जनगणना 00
132. विविध 00

विज्ञान

भौतिक विज्ञान

133. मात्रक एवं मापन 00
134. बल और गति 00
135. कार्य, ऊर्जा और शक्ति 00
136. गुरुत्वाकर्षण 00
137. द्रव्य के यांत्रिक गुण 00
138. तरंग गति और ध्वनि 00
139. ऊष्मा, ताप और ऊष्मागतिकी 00
140. प्रकाशिकी 00
141. विद्युत धारा और चुम्बकत्व 00

रसायन विज्ञान

142. पदार्थ एवं उसकी प्रकृति 00
143. परमाणु संरचना 00
144. ऑक्सीकरण एवं अपचयन 00
145. संयोजकता 00
146. तत्वों का आवर्ती वर्गीकरण 00
147. हाइड्रोजन एवं उसके यौगिक 00
148. अम्ल, क्षार एवं लवण 00
149. कार्बन एवं उसके यौगिक 00
150. विलयन 00
151. रासायनिक अभिक्रियाएँ 00
152. विविध 00

जीव विज्ञान

153. जीव विज्ञान का सामान्य परिचय 00
154. जीवों का वर्गीकरण 00
155. कोशिका विज्ञान 00
156. ऊतक 00
157. वनस्पति विज्ञान 00
158. पोषक पदार्थ 00
159. कंकाल तंत्र 00
160. श्वसन तंत्र 00
161. पाचन तंत्र 00
162. उत्सर्जन तंत्र 00
163. तंत्रिका तंत्र 00
164. परिसंचरण तंत्र 00
165. अंत: स्रावी तंत्र 00
166. प्रजनन तंत्र 00
167. मानव रोग 00

पर्यावरण

168. पारिस्थितिकी 00
169. पर्यावरण के खटक 00
170. खाद्य शृंखला 00
171. खाद्य जाल 00
172. पारिस्थतिकी तंत्र में ऊर्जा प्रवाह 00
173. पारिस्थतिकी पिरामीड 00
174. जैव भू-रासायनिक चक्र 00
175. पारिस्थितिक पदछाप 00
176. पारिस्थितिक अनुक्रमण 00
177. पारिस्थितिक अनुक्रमण की सामान्य प्रक्रियाएँ 00
178. जैविक अन्योन्य क्रिया 00
179. कीस्टोन प्रजाति 00
180. अनुकूलन 00
181. जैव विविधता 00

- जैव विविधता क्षय के प्रमुख कारण
- जैव विविधता के प्रकार
- जैव विविधता का संरक्षण
- जैव विविधता विरासत स्थल

182. प्रवाल भित्तियाँ 00
- पारिस्थितिक महत्त्व
- प्रवाल भित्तियों के प्रकार
- प्रवाल भित्तियों के समक्ष प्रमुख खतरें
- संरक्षण के प्रयास

183. भारत में पर्यावरण संरक्षण से संबंधित प्रमुख अधिनियम 00
184. भारत में पर्यावरण संस्थाएँ 00
185. अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय संस्थाएँ 00
186. मैंग्रोव पारितंत्र 00
187. आर्द्रभूमिका 00
- आर्द्रभूमियों के प्रकार
- आर्द्रभूमि संरक्षण के प्रयास

188. ओजोन क्षरण 00
189. कार्बन टैक्स 00
190. अर्थ ऑवर 00
191. जैव ईंधन 00
192. ग्रीन वॉशिंग 00
193. ऑयल जैवर तकनीक 00
194. अम्ल दृष्टि 00
195. जैव उपचार 00
196. पर्यावरण प्रदूषण 00
- प्रदूषण के प्रकार, कारण प्रभाव, नियंत्रण के प्रयास

197. हरित ग्रह प्रभाव 00
198. ग्लोबल वार्मिंग 00
- ग्लोबल वार्मिंग के प्रकार
- ग्लोबल वार्मिंग के प्रकार

199. जलवायु परिवर्तन पर महत्त्वपूर्ण सम्मेलन 00
200. भारत के प्रमुख बाघ अभयारण्य 00
201. राष्ट्रीय पार्क 00
202. सामुदायिक रिजर्व और संरक्षण रिजर्व 00
203. IUCN (अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ) 00
- IUCN (की लाल सूची)

204. भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (संशोधन 2022) 00
205. भारत में जीव जंतुओं से संबंधित संरक्षण परियोजनाएं 00
206. पर्यावरणीय क्षेत्र में दिए जाने वाले प्रमुख पुरस्कार 00
207. पर्यावरण संबंधित प्रमुख सूचकांक 00

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

208. अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी 00
209. स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी 00
210. नाभिकीय प्रौद्योगिकी 00
211. रक्षा प्रौद्योगिकी 00
212. जैव प्रौद्योगिकी 00
213. रोबोटिक्स 00
214. नैनो प्रौद्योगिकी 00
215. उभरती प्रौद्योगिकीयाँ 00
216. विविध 00

स्टेटिक जी.के.

217. भारतीय संगीत 00
218. भारत की प्रसिद्ध लोककला/ चित्रकला 00
219. त्यौहार एवं उत्सव 00
220. प्रमुख वाद्ययंत्र वादक एवं घराने 00
221. भारतीय परिधान 00
222. भारतीय रामसर साइट्स एवं यूनेस्को हेरीटेज साइट्स 00
223. पुस्तकें एवं लेखक 00
224. विश्व के महत्वपूर्ण स्मारक 00
225. प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठन एवं मुख्यालय 00
226. प्रमुख राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार 00
227. भारतीय राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश 00
228. खेल एवं खिलाड़ी 00
229. भारत में स्थित प्रमुख गार्डन 00
230. जनगणना 2011 00
231. प्रमुख उपाधि प्राप्तकर्ता एवं प्रदाता 00
232. महत्वपूर्ण नियामक संस्थाएं 00
233. भारत व विश्व में प्रथम, लंबा एवं चौड़ा,अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ 00
234. भारत के प्रमुख संग्रहालय 00
235. केंद्र एवं राज्य सरकारों की प्रमुख योजनाएँ 00

कम्प्यूटर

236. कम्प्यूटर का विकास 00
237. कम्प्यूटर की पीढ़ियाँ 00
238. कम्प्यूटर का वर्गीकरण 00
239. हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर 00
240. इनपुट यूनिट 00
241. आउटपुट यूनिट 00
242. कम्प्यूटर मेमोरी-स्टोरेज 00
243. प्रोग्रामिंग भाषाएं 00
244. ई-मेल 00
245. सोशल नेटवर्किंग 00
246. ई-गवर्नेंस 00
247. डिजिटल वित्तीय उपकरण 00
248. इंटरनेट 00
249. वर्ल्ड वाइड वेब 00
250. साइबर सुरक्षा 00
251. एम.एस.ऑफिस (वर्ड, एक्सेल, पॉवर प्वाइंट) 00
252. कृत्रिम बुद्धिमत्ता 00
253. बिग डेटा 00
254. डीप लर्निंग 00
255. मशीन लर्निंग 00
256. इंटरनेट ऑफ थिंग्स 00
257. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी 00
258. महत्वपूर्ण शब्दावली 00
259. पूर्ण नाम (Full Form) 00

इतिहास

History

1 प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन के प्रमुख स्रोत एवं प्रागैतिहासिक काल

भूमिका

- इतिहास के जनक 'हेरोडोटस' है। इन्होंने 'हिस्टोरिका' नामक पुस्तक लिखी थी।
- इतिहास अतीत में मानव के द्वारा किए गए प्रयासों की एक आनुक्रमिक कथा है।
- इतिहास के आवश्यक एवं अनिवार्य अंग अतीत, सभ्य युग, मानव के द्वारा किए गए प्रयास तथा घटनाओं का आनुक्रमिक प्रसार हैं।
- वह घटना जो संपन्न हो चुकी है; चाहे अभी या चाहे सहस्राब्दियों पूर्व, इतिहास का एक अंग बन जाती है।
- इतिहास ऐसी बातों का वृत्तांत होता है, जो भूतकाल में हुई हो।
- इतिहास विगत घटनाओं के बारे में चिंतन करता है।
- इतिहास हमारी तथा हमारे समाज की दिशा एवं दशा का निर्धारण करता है और भविष्य को सुरक्षित रखने का भी प्रयास करता है।
- प्राचीन भारत का इतिहास मानव सभ्यता के उस समय का इतिहास है, जब वह अपने निर्माण की अवस्था में था।

प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के प्रमुख स्रोत

- प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के प्रमुख स्रोत विविध एवं विभिन्न प्रकार के हैं।
- हमारे इतिहास के स्रोतों के क्षेत्र में किसी नदी के तट पर एक निर्जन टीले को खोदकर निकाले गए प्रागैतिहासिक काल के मानव के द्वारा पत्थर को काटकर निर्मित किए गए गंडासों से लेकर भव्य इमारतों के भग्नावशेषों तथा राजकवि बाणभट्ट के द्वारा रचित हर्षचरित तक समस्त प्रकार की वस्तुएँ सम्मिलित हैं।
- अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से, हम इन स्रोतों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं–
  1. पुरातात्विक स्रोत
  2. साहित्यिक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत

अभिलेख

- सबसे प्राचीन अभिलेखों में **मध्य एशिया** के बोगज़कोई से प्राप्त अभिलेख हैं। इन अभिलेखों पर वैदिक देवता मित्र, वरुण, इन्द्र और नासत्य के नाम मिलते हैं। इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में भी सहायता मिलती है।
- सर्वप्रथम वर्ष 1837 में **जेम्स प्रिंसेप** ने **ब्राह्मी लिपि** में लिखित सम्राट अशोक के अभिलेख को पढ़ा था।

प्रमुख अभिलेख	संबंधित शासक	विषय-वस्तु
हाथीगुम्फा अभिलेख	खारवेल	खारवेल के शासन की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण।
जूनागढ़ अभिलेख/ गिरनार अभिलेख	रुद्रदामन प्रथम	रुद्रदामन प्रथम की विजयों, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवरण।
नासिक अभिलेख	रचनाकार – गौतमी बलश्री	सातवाहनकालीन घटनाओं का विवरण (गौतमीपुत्र शातकर्णी से संबंधित)।
प्रयाग स्तंभ लेख	समुद्रगुप्त	समुद्रगुप्त की विजयों एवं नीतियों का विवरण।
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय	हर्षवर्द्धन एवं पुलकेशिन द्वितीय के मध्य युद्ध का विवरण।
भीतरी स्तंभ लेख	स्कंदगुप्त	स्कंदगुप्त के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण।
मंदसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोधर्मन	सैनिक उपलब्धियों का विवरण।

स्मारक एवं भवन

- प्राचीन काल में भारत में भारी संख्या में मंदिरों का निर्माण हुआ, केंद्रीय अवशेष बिखरे रूप में पूरे देश में स्थित हैं।
- महलों एवं मंदिरों की शैली से **वास्तुकला** के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- विभिन्न स्थानों से मंदिर, **जैसे**- देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर), अजंता की गुफाओं के चित्र इत्यादि के प्रमाण मिलते हैं।
- उत्तर भारत के मंदिर **'नागर शैली'**, मध्य भारत के मंदिर **'बेसर शैली'** एवं दक्षिण भारत के मंदिर **'द्रविड़ शैली'** में निर्मित हैं।
- **दक्षिण भारत** में तंजौर (तंजावुर) का **राजराजेश्वर मंदिर (बृहदेश्वर मंदिर)** द्रविड़ शैली तथा **उत्तर भारत** में खजुराहो का **कन्दरिया महादेव** का मंदिर नागर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

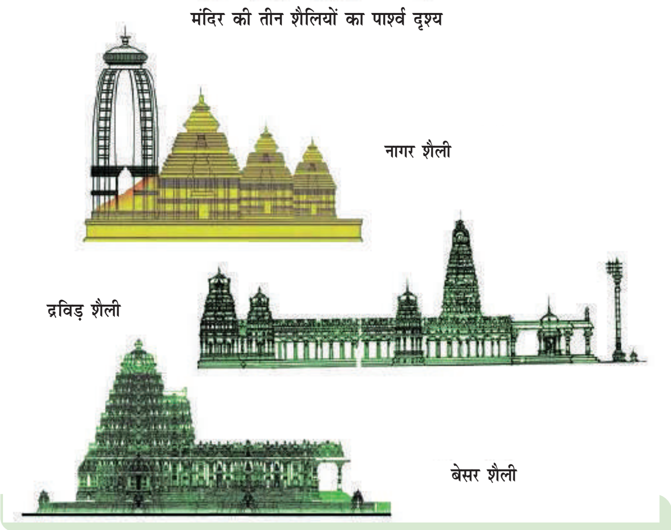

चित्र: मंदिर निर्माण की शैलियाँ

सिक्के

- पुराने सिक्के तांबा, चाँदी, सोना एवं सीसा धातु से निर्मित थे।
- प्राचीनतम सिक्कों को **'आहत सिक्के'** कहा जाता है। आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के ई.पू. पाँचवीं सदी के दौरान के हैं।
- इन सिक्कों पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि के चिह्न निर्मित होते थे।
- सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में निर्मित हुए, जो मुख्यत: तांबा, चाँदी, सोने एवं सीसे के हैं।
- सातवाहन शासकों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किए थे।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों द्वारा किया गया था।

मुहरें

- प्राचीन भारत के इतिहास को लिखने में अवशेषों से प्राप्त मुहरों से अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई है। इन मुहरों के माध्यम से तत्कालीन आर्थिक एवं धार्मिक जीवन के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती हैं।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त मिट्टी की मुहरों पर बने धार्मिक चिह्नों/प्रतीकों से उस समय की धार्मिक स्थितियों का ज्ञान होता है।

मूर्तियाँ एवं चित्रकला

- प्राचीन भारत के इतिहास में मूर्तियों का निर्माण कार्य संभवत: कुषाण काल से प्रारंभ हुआ है।
- गांधार कला की मूर्तियाँ वैदेशिक तथा मथुरा कला की मूर्तियाँ पूर्ण रूप से स्वदेशी है। गांधार मूर्तिकला शैली में मुख्यत: बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता अपोलो के समान बनाई गई है। मथुरा कला भरहुत एवं साँची की कलाओं के साथ निकटतम संबंधित है।
- अमरावती, बोधगया, भरहुत एवं साँची की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झलक दिखाई देती है।
- अजंता में स्थित बोधिसत्त्व पद्मपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा प्राय: चित्रित चित्रकारी है। अजंता के चित्रों में मनोभावों की एक सुंदर झलक देखने को मिलती है।
- चित्रकला में 'माता एवं उसके शिशु' और 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्तकालीन कलात्मक उन्नति का पूर्ण रूप से आभास होता है।

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन के प्रमुख स्रोत

- **1. पुरातात्विक स्रोत**
  - अभिलेख
  - स्मारक एवं भवन
  - सिक्के
  - मुहरें
  - मूर्तियाँ एवं चित्रकला
- **2. साहित्यिक स्रोत**
  - भारतीय साहित्य
    - धार्मिक साहित्य
      - ब्राह्मण साहित्य
        - वेद: ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
        - ब्राह्मण ग्रंथ: ऐतरेय, कौषीतकि, शतपथ, तैत्तिरीय, पंचविंश, षड्विंश, गोपथ
        - आरण्यक: तैत्तिरीय, मैत्रायणी, ऐतरेय आदि।
        - उपनिषद्: छांदोग्य, कठ, बृहदारण्यक आदि।
        - वेदांग: शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष
        - उपवेद: आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, शिल्पवेद
        - षड्दर्शन: सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व-मीमांसा, उत्तर-मीमांसा
        - महाकाव्य: महाभारत, रामायण आदि।
        - पुराण: मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवत पुराण आदि।
        - स्मृति ग्रंथ: मनुस्मृति, नारद स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि।
      - बौद्ध साहित्य
        - सुत्तपिटक
        - विनयपिटक
        - अभिधम्मपिटक
        - मिलिंदपन्हो
        - बुद्धचरित
        - दिव्यावदान
      - जैन साहित्य
        - कल्पसूत्र
        - भद्रबाहुचरित
        - भगवतीसूत्र
        - परिशिष्टपर्वन
    - लौकिक साहित्य
      - पाणिनी का अष्टाध्यायी
      - चाणक्य/कौटिल्य का अर्थशास्त्र
      - कल्हण की राजतरंगिणी
      - विशाखदत्त का मुद्राराक्षस
      - कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, रघुवंशम्, मेघदूत
      - बाणभट्ट का हर्षचरित, कादंबरी
    - संगम साहित्य
      - तिरुकुरल
      - मणिमेखलै
      - शिलप्पादिकारम्
      - जीवक चिंतामणि
  - विदेशी साहित्य
    - यूनान एवं रोम के लेखक
      - मेगस्थनीज
      - टॉलमी
      - हेरोडोटस
      - नियार्कस
      - अरिस्टोबुलस
    - चीन के लेखक
      - फाह्यान
      - ह्वेनसांग
      - इत्सिंग
    - अरब के लेखक
      - अल सुलेमान
      - अल-मसूदी
      - इब्नबतूता

साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोत दो प्रकार के होते हैं-

1. धार्मिक साहित्य
2. लौकिक साहित्य/धर्मेत्तर साहित्य

- **धार्मिक साहित्य** के अंतर्गत ब्राह्मण साहित्य तथा ब्राह्मणेत्तर साहित्य सम्मिलित हैं।
- ब्राह्मण साहित्य में प्रमुखतः वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग, महाकाव्य (महाभारत, रामायण आदि), पुराण एवं स्मृति ग्रंथ इत्यादि सम्मिलित हैं।
- ब्राह्मणेत्तर साहित्य में बौद्ध एवं जैन साहित्य की रचनाएँ सम्मिलित हैं।
- **लौकिक साहित्य** के अंतर्गत ऐतिहासिक ग्रंथ, विदेशी विवरण एवं जीवनियाँ इत्यादि सम्मिलित हैं।

नोटः- वैदिक साहित्य कालावधि में मुख्य रूप से चार चरणों (**वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषद्**) में साहित्य का विकास देखा जाता है।

ब्राह्मण साहित्य

वेद

- ब्राह्मण साहित्य में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान वेदों का है। माना जाता है कि वेदों की रचना वैदिक काल में हुई थी। वेद वैदिक काल की सांस्कृतिक दशा के ज्ञान का एकमात्र स्रोत हैं।
- 'वेद' संस्कृत भाषा के विद् धातु से बना है, जिसका अर्थ 'जानना या ज्ञान प्राप्त करना' होता है। इनकी (वेदों की) संख्या चार है–

  1. ऋग्वेद **2.** यजुर्वेद

  3. सामवेद **4.** अथर्ववेद

  नोट:-

  1. इन चारों वेदों के सम्मिलित रूप को 'संहिता' कहा गया है। संहिता वैदिक मंत्रों का संग्रह है।

  2. श्रवण परंपरा में सुरक्षित होने के कारण इन वेदों को 'श्रुति' भी कहा जाता है।

  3. प्रथम तीन वेदों (**ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद**) को 'वेदत्रयी' कहा जाता है। त्रयी का शाब्दिक अर्थ 'तीन वेद' होता है।

क्र.सं.	वेद	यज्ञ कराने वाले पुरोहित का नाम	प्रमुख कार्य
1.	ऋग्वेद	होता (होतृ)	देवताओं को यज्ञ में बुलाना एवं ऋचाओं का पाठ करते हुए देवों की स्तुति करना।
2.	यजुर्वेद	अध्वर्यु	याज्ञिक कर्मकांडों का समुचित अनुष्ठान।
3.	सामवेद	उद्गाता/उद्गात्रि	ऋचाओं का सस्वर गायन।
4.	अथर्ववेद	ब्रह्मा	यज्ञ का पूर्ण निरीक्षण करना। यह तीनों अन्य पुरोहितों के यज्ञ संपादन का निरीक्षण भी करता था अर्थात् यह सर्वोच्च पुरोहित था।

वेद	उपवेद
ऋग्वेद	आयुर्वेद
यजुर्वेद	धनुर्वेद
सामवेद	गंधर्ववेद
अथर्ववेद	शिल्पवेद

ऋग्वेद

- यह सबसे प्राचीन एवं विशालतम वेद है। यह एक ऐसा वेद है जो ऋचाओं में बद्ध है।

  नोट:- ऋक् का शाब्दिक अर्थ 'छंदों एवं चरणों से युक्त मंत्र' होता है।
- अधिसंख्य विद्वानों ने यह माना है कि ऋग्वेद की रचना 2000 ई.पू. के आस-पास हुई थी। (**NCERT के एक आंकड़े के अनुसार**)

  नोट:- कुछ विद्वान ऋग्वेद का रचनाकाल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य मानते है।
- यद्यपि ऋग्वेद की कुल 21 शाखाएँ थी, किंतु आज केवल शाकल, शांखायन एवं आश्वलायन शाखाएँ ही मिलती हैं।
- ऋग्वेद में कुल 10 मंडल, 1028 सूक्त तथा 10,580 ऋचाएँ हैं।
- 1028 सूक्तों में से ऋग्वेद के साकल पाठ में कुल 1017 सूक्त हैं तथा 11 बालखिल्य सूक्त हैं।
- ऋग्वेद के सूक्तों में प्रमुख रूप से इन्द्र एवं अग्नि देवता की प्रार्थना है।

  नोट:-

  1. ऋग्वेद का पहला तथा अंतिम (दसवाँ) मंडल सबसे बाद में जोड़ा गया है अर्थात् संभवत: सबसे नवीनतम एवं बड़े मंडल ये दोनों ही हैं। इन मंडलों में अनेक वंशों के ऋषियों की रचनाएँ हैं।

  2. ऋग्वेद का दूसरा मंडल सबसे छोटा मंडल है।

  3. ऋग्वेद के सबसे प्राचीन मंडल दूसरे से सातवें मंडल तक माने जाते हैं तथा सातवें मंडल की ऋचाएँ सबसे पुरानी मानी जाती है।
- ऋग्वेद के तीसरे मंडल में प्रसिद्ध देवी सूक्त वर्णित है, जिसमें सवितृ की उपासना गायत्री के रूप में की गई है। ऋग्वेद के तीसरे मंडल में गायत्री मंत्र वर्णित है, जिसकी रचना विश्वामित्र ने की थी।
- ऋग्वेद का सातवाँ, आठवाँ तथा नौवाँ मंडल क्रमश: वरुण, कण्व ऋषि व सोम देवता को समर्पित है।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल में सर्वाधिक सूक्त वर्णित हैं, जिनमें पुरुष सूक्त, नदी सूक्त, नासदीय सूक्त, विवाह सूक्त (सूर्य सूक्त) प्रमुख हैं।
- ऋग्वेद का 'विवाह सूक्त' पूषन/पूषण देवता को समर्पित है, जिसकी रचना सूर्य ने की थी। इस कारण इसे 'सूर्य सूक्त' भी कहा जाता है।

  नोट:- ऋग्वेद के दसवें मंडल का 85वाँ सूक्त (विवाह सूक्त) ब्रह्म विवाह से संबंधित है। इसके अंतर्गत सूर्य की पुत्री सूर्या तथा सोम के विवाह का वर्णन है।
- ऋग्वेद में देवताओं के रूप में सविता, रुद्र, मित्र, वरुण, सूर्य, मरुत एवं उषा देवी का भी उल्लेख मिलता है।
- लक्ष्मी एवं अयोध्या का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है। ब्रह्मा का उल्लेख ऋग्वेद में कहीं पर भी नहीं हुआ है।
- स्तूप शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है एवं ऊँट का उल्लेख भी ऋग्वेद में मिलता है।
- ऋग्वेद में आर्यों के शत्रुओं के रूप में पणि, दास एवं अरि का उल्लेख है।
- ऐतरेय एवं कौषीतकि ऋग्वेद के प्रमुख उपनिषद् हैं।

यजुर्वेद

- यजु का शाब्दिक अर्थ 'यज्ञ' होता है। यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी सूक्तों का संकलन है। कर्मकांड प्रधान होने की वजह से यजुर्वेद को 'कर्मकांडीय वेद' भी कहा गया है।
- कर्मकांड में उपयोगी होने के कारण यजुर्वेद अन्य सभी वेदों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय है। वेदों के अनेक भाष्यकार यजुर्वेद पर व्याख्या लिखना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझते हैं।
- प्राचीन काल में यजुर्वेद की कुल 101 शाखाएँ थी।
- यजुर्वेद गद्य तथा पद्य दोनों में लिखा गया है। इसके दो भाग हैं–

  1. शुक्ल यजुर्वेद (केवल पद्य में)

  2. कृष्ण यजुर्वेद (गद्य तथा पद्य दोनों में)

नोट:-

1. शुक्ल यजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा 'वाजसनेयी संहिता' तथा कृष्ण यजुर्वेद की सर्वाधिक प्रसिद्ध शाखा 'तैत्तिरीय संहिता' है।

2. शुक्ल यजुर्वेद में 40 अध्याय हैं, जिनमें विविध यज्ञों से संबद्ध मंत्र संकलित हैं।

3. मैत्रायणी, काठक एवं कपिष्ठल कृष्ण यजुर्वेद की प्रमुख संहिताओं में से एक हैं।

- वाजसनेयी संहिता के 'पुरुषमेध सूक्त' में सर्वप्रथम चांडाल का उल्लेख हुआ है।
- वैश्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वाजसनेयी संहिता में मिलता है।
- तैत्तिरीय संहिता में देधिषव्य शब्द का प्रयोग किया गया है, इस शब्द का अर्थ 'विधवा का पुत्र' होता है।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्री को पासा (द्यूत) तथा सुरा के साथ तीन प्रमुख बुराइयों में गिना गया है।
- कठोपनिषद्, मैत्रायणी (मैत्री), तैत्तिरीय एवं श्वेताश्वतरोपनिषद् यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषदों में से एक हैं।
- शुक्ल यजुर्वेद का अंतिम अध्याय (ईशावास्योपनिषद्) दार्शनिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें ईश्वर को संसार का नियामक बताया गया है।

सामवेद

- साम का शाब्दिक अर्थ 'गान' होता है। सामवेद में प्रमुख रूप से यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संकलन है। सामवेद में मुख्यत: सूर्य स्तुति के मंत्र हैं। सामवेद के मंत्रों का प्रयोग यज्ञ में देवताओं के आह्वान हेतु उचित स्वर के साथ उद्गाता/उद्गात्रि के द्वारा किया जाता था।
- सामवेद छंदोबद्ध है एवं 75 मंत्रों को छोड़कर शेष मंत्र ऋग्वेद में भी उपलब्ध होते हैं। सामवेद के मंत्रों के गान में लय एवं स्वर का विशेष रूप से विधान है।
- सामवेद का महत्त्व संगीत की दृष्टि से बहुत अधिक है। सामवेद को भारतीय संगीत का जनक भी कहते है। माना जाता है कि सात स्वरों की उत्पत्ति सामवेद से ही हुई थी। सामवेद में ग्रामगेय (स्वर-विशेष) गानों की संख्या सर्वाधिक है।
- प्राचीन ग्रंथों की सूचना के आधार पर माना जाता है कि सामवेद की कुल 1000 शाखाएँ थी। वर्तमान में उपलब्ध तीन-चार शाखाओं में से कौथुम शाखा सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- सामवेद के पंचविंश (तांड्य) ब्राह्मण में सरस्वती नदी के प्रकट तथा विलुप्त होने का विवरण दिया गया है।
- छांदोग्य, जैमिनीय एवं केन सामवेद के प्रमुख उपनिषद् हैं।

अथर्ववेद

- यह सबसे नवीनतम वेद है। इस वेद में यज्ञ से भिन्न विषयों का संकलन है।
- वैदिक परंपरा में अथर्ववेद को 'ब्रह्मवेद' कहा गया है अर्थात् वह ब्रह्मा नामक ऋत्विज् के उपयोग हेतु है।
- अथर्ववेद को अथर्वाङ्गिरसवेद भी कहा जाता था अर्थात् इसके दो ऋषि अथर्वा एवं अङ्गिरस (अंगिरस) थे।
- अथर्ववेद को 20 कांडों में विभाजित किया गया है, जिनमें सूक्त एवं मंत्र वर्णित हैं।
- अथर्ववेद में 731 सूक्त एवं 5849 मंत्र हैं। इन मंत्रों में लगभग 1200 मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- अथर्ववेद के बारहवें कांड में भूमि सूक्त है, जिसमें पृथ्वी की महत्ता का प्रतिपादन है। इसी में कहा गया है कि **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"** अर्थात् पृथ्वी मेरी माता है, मैं उसका पुत्र हूं।
- अथर्ववेद में दार्शनिक सूक्त भी आए हैं, ये सूक्त ब्रह्म, तप एवं असत् के विषय में विचार करते हैं।
- सर्वप्रथम अथर्ववेद में ही लौकिक विषयों को व्यापक महत्त्व दिया गया है।
- अथर्ववेद के मंत्रों में भूत-प्रेतों का निवारण, शत्रुनाश, कीट-पतंगों का नाश, आरोग्य प्राप्ति, अध्यात्म-विद्या, गृह-सुख, विवाह, इष्ट वस्तु का लाभ, वाणिज्य, कृषि में वृद्धि, पितरों की पूजा इत्यादि का विवेचन है।
- अथर्ववेद में विविध रोगों का स्वरूप बतलाकर उनके निवारण की व्यापक विधि भी दी गई है।
- अथर्ववेद में 'ब्रह्म ज्ञान' के विषय में भी वर्णन है। आयुर्वेद का उल्लेख भी अथर्ववेद में ही मिलता है।
- अथर्ववेद में मगध के लोगों को 'व्रात्य' तथा परीक्षित को 'मृत्युलोक का देवता' कहा गया है।
- मुंडकोपनिषद्, मांडूक्योपनिषद् एवं प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद के प्रमुख उपनिषद् हैं।

नोट:- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुंडकोपनिषद् से लिया गया है।

ब्राह्मण ग्रंथ

- ब्राह्मण ग्रंथों को 'वेदों का परिशिष्ट' माना जाता है। ब्राह्मण ग्रंथों की रचना वेदों की सरल व्याख्या के लिए गद्य में की गई। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मन् से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'वेद (ब्रह्म) से संबद्ध' होता है। अत: वेदों की शाखाओं की व्याख्या करने हेतु पृथक्-पृथक् ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गए।
- ब्राह्मण ग्रंथों का मूल स्वरूप धार्मिक है। वेद (संहिता) 'स्तुति प्रधान' हैं जबकि ब्राह्मण ग्रंथ 'विधि प्रधान' हैं।
- प्रत्येक वेद के लिए अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ हैं। वैदिक कर्मकांड का विकास ब्राह्मण ग्रंथों से जाना जा सकता है।
- ऋग्वेद से संबंधित दो ब्राह्मण ग्रंथ हैं-
  1. ऐतरेय ब्राह्मण
  2. कौषीतकि ब्राह्मण
- ऐतरेय ब्राह्मण ऐतरेय महीदास की रचना है। इसमें कुल 40 अध्याय हैं।
- कौषीतकि ब्राह्मण कहोड़ कौषीतकि की रचना है। इसमें कुल 30 अध्याय हैं।
- शुन: शेप आख्यान ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित है, जो 'चरैवेति, चरैवेति' का अर्थात् सतत् गतिशीलता एवं सक्रियता का गान करता है।
- शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व दोनों शाखाओं के ब्राह्मण ग्रंथों का नाम शतपथ है, लेकिन दोनों शाखाओं के शतपथ ब्राह्मण पृथक्-पृथक् हैं।
- समस्त ब्राह्मण ग्रंथों में याज्ञवल्क्य को प्रामाणिक माना गया है, क्योंकि इसी ऋषि ने सूर्य की उपासना करके शुक्ल यजुर्वेद की प्राप्ति की थी।
- ऋग्वेद के पश्चात् शतपथ ब्राह्मण वैदिक साहित्य में सबसे बड़ा ग्रंथ है। शतपथ ब्राह्मण में दर्शपूर्णमास, पितृयज्ञ (श्राद्ध), उपनयन, स्वाध्याय, अश्वमेध एवं सर्वमेध इत्यादि का वर्णन है।

नोट:-

1. स्त्रियों को अर्द्धांगिनी सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है।
2. मृत्यु की चर्चा सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में मिलती है।
3. पुनर्जन्म के सिद्धांत का उल्लेख सर्वप्रथम शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

4. जलप्लावन की कथा का वर्णन शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

- तैत्तिरीय ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित है, जो वास्तव में तैत्तिरीय संहिता का ही परिशिष्ट है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में तीन कांड अथवा अष्टक हैं। इन कांड अथवा अष्टक में अग्न्याधान/अग्न्याध्येय यज्ञ एवं सौत्रामणि यज्ञ इत्यादि वर्णित है।
- सामवेद से संबंधित प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ हैं **जैसे-** पंचविंश (तांड्य), षड्विंश एवं जैमिनीय इत्यादि। इनके अतिरिक्त सामवेद से संबंधित ब्राह्मण ग्रंथ हैं **जैसे-** आर्षेय, छांदोग्य, सामविधान एवं संहितोपनिषद् इत्यादि।
- पंचविंश (तांड्य) ब्राह्मण में प्राचीन दंतकथाओं के साथ व्रात्यों (आर्य जाति से बहिष्कृत वर्ग) के पुनः वर्ण प्रवेश का उल्लेख है।
- षड्विंश ब्राह्मण में चमत्कार एवं शकुन से संबद्ध अद्भुत ब्राह्मण नामक एक अध्याय है।
- जैमिनीय ब्राह्मण में तीन भाग हैं एवं यह शतपथ ब्राह्मण के समान ही महत्त्वपूर्ण है। इसमें विज्ञान की सामग्री भी मिलती है।
- ब्राह्मण ग्रंथों में 'गोपथ ब्राह्मण' की रचना सबसे अंत में हुई थी, जोकि अथर्ववेद से संबंधित एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ है। इसके दो भाग हैं-
  1. पूर्व गोपथ
  2. उत्तर गोपथ
- गोपथ में सृष्टि, गायत्री, ब्रह्मचर्य इत्यादि की महिमा तथा ओंकार के साथ (ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) की त्रिमूर्ति का भी उल्लेख है।
- ब्राह्मण ग्रंथों में सांस्कृतिक तत्वों का बीज भी प्राप्त होता है, **जैसे-** यज्ञ का महत्त्व, सृष्टि की व्याख्या, अतिथि-सत्कार, सदाचार, स्त्री-महिमा, विद्यावंश एवं वर्णाश्रम-धर्म इत्यादि।

क्रं.सं.	वेद	ब्राह्मण ग्रंथ
1.	ऋग्वेद	ऐतरेय एवं कौषीतकि
2.	यजुर्वेद	शतपथ एवं तैत्तिरीय
3.	सामवेद	पंचविंश एवं षड्विंश
4.	अथर्ववेद	गोपथ

आरण्यक

- आरण्यकों की रचना वनों में हुई थी। वनों में रहकर चिंतन करने वाले ऋषियों ने वैदिक कर्मकांडों से दूर रहकर उनमें प्रतीक खोजने की चेष्टा की थी।
- ब्राह्मणों के परिशिष्ट के रूप में विकसित आरण्यकों में यज्ञ के अंतर्गत अध्यात्मवाद का पल्लवन किया गया था।
- आरण्यकों का वैशिष्ट्य 'प्राणविद्या का विवेचन' है। वानप्रस्थों के यज्ञों का विधान करने के साथ-साथ उपनिषदों के ज्ञान-कांड की भूमिका भी आरण्यकों में निर्मित की गई।
- वर्तमान में 7 आरण्यक ग्रंथ उपलब्ध हैं, जोकि निम्नलिखित हैं-
  1. ऋग्वेद के 2 आरण्यक (ऐतरेय एवं कौषीतकि)
  2. यजुर्वेद के 3 आरण्यक (बृहदारण्यक, तैत्तिरीयारण्यक एवं मैत्राय णीयारण्यक)
  3. सामवेद के 2 आरण्यक (छांदोग्य एवं जैमिनीय)

  नोटः- अथर्ववेद का कोई आरण्यक नहीं है।
- कालांतर में आरण्यकों से ही उपनिषदों का विकास हुआ था।

उपनिषद्

- 'उपनिषद्' दो शब्दों से मिलकर बना है, **एक शब्द** 'उप' जिसका अर्थ 'समीप' है तथा **दूसरा शब्द** 'निषद्' जिसका अर्थ 'बैठना' है।
- वैदिक साहित्य में प्रचार की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व उपनिषदों का ही है। उपनिषदों की महत्ता दार्शनिक विचारों के कारण है, केंद्रीय कारण ये (उपनिषद्) देश-विदेश में लोकप्रिय हैं।
- उपनिषदों में गद्य तथा पद्य दोनों का प्रयोग हुआ है। उपनिषदों में प्रायः संवादों के माध्यम से तत्वज्ञान समझाया गया है। उपनिषदों में परम सुख की प्राप्ति का मार्ग भी समझाया गया है।
- मुख्यतः प्राचीन उपनिषदों की संख्या 13 थी, लेकिन कालांतर में इनकी संख्या शताधिक (100 से भी अधिक) हो गई थी।
- वैदिक शाखाओं में मूल रूप से दार्शनिक चिंतन हेतु विकसित उपनिषदों की गणना इस प्रकार से की जाती है-
  1. ऐतरेय एवं कौषीतकि (ऋग्वेद से संबंधित)
  2. ईश एवं बृहदारण्यक (शुक्ल यजुर्वेद से संबंधित)
  3. कठ, मैत्रायणी (मैत्री), तैत्तिरीय एवं श्वेताश्वतर (कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित)
  4. छांदोग्य, जैमिनीय एवं केन (सामवेद से संबंधित)
  5. मुंडक, मांडूक्य एवं प्रश्न (अथर्ववेद से संबंधित)
- वेदांत दर्शन का विकास उपनिषदों के आधार पर ही हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप ब्रह्मसूत्र की रचना बादरायण ने की।
- ब्रह्म के तीन लक्षणों (सत्, चित् एवं आनंद) की व्याख्या उपनिषदों में सम्यक् रूप से की गई है।
- शंकराचार्य ने दस (10) उपनिषदों पर भाष्य लिखकर 'अद्वैतवाद मत' का प्रवर्तन किया था।
- ऐतरेय, कौषीतकि, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, छांदोग्य एवं मांडूक्य उपनिषद् गद्य में है।
- केन एवं प्रश्न उपनिषद् गद्य तथा पद्य दोनों में है।
- निष्काम कर्म के सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रतिपादन ईश उपनिषद् में हुआ है।
- बृहदारण्यक उपनिषद् सबसे बड़ा उपनिषद् है तथा मांडूक्य उपनिषद् सबसे छोटा उपनिषद् है।
- सत्यकाम जाबाल की कथा, जो अनब्याही माँ होने के लांछन को चुनौती देता है, का विवरण छांदोग्य उपनिषद् के चतुर्थ अध्याय में मिलता है।
- बृहदारण्यक उपनिषद् में जनक-याज्ञवल्क्य के शास्त्रार्थ से ब्रह्म का निरूपण है।
- बृहदारण्यक उपनिषद् में याज्ञवल्क्य की विदुषी पत्नी मैत्रेयी और उनसे शास्त्रार्थ करने वाली गार्गी की कथा आई है, जिससे उस युग की विदुषी स्त्रियों के बारे में जानकारी मिलती है।
- पुनर्जन्म के सिद्धांत की अवधारणा सर्वप्रथम बृहदारण्यक उपनिषद् में मिलती है।'
- "तमसो मा ज्योतिर्गमय" का विवरण बृहदारण्यक उपनिषद् में मिलता है।
- कठ उपनिषद् में यम-नचिकेता के संवाद में आत्मा का स्वरूप बतलाया गया है।
- "अतिथि देवो भवः" का विवरण तैत्तिरीय उपनिषद् में मिलता है।

वेदांग

- वैदिक अर्थों को समझने में कठिनाई का अनुभव करने वाले व्यक्तियों ने 6 वेदांगों की रचना की थी या वेदों को भली-भाँति जानने एवं समझने हेतु 6 वेदांगों की रचना की गई थी।
- वेदों के 6 अंग माने गए हैं, जोकि निम्नलिखित हैं-
  1. शिक्षा
  2. कल्प

3. व्याकरण 4. निरुक्त
5. छंद 6. ज्योतिष

वेदांग	एक दृष्टि में
शिक्षा	वेद की नाक
कल्प	वेद के हाथ
व्याकरण	वेद का मुख
निरुक्त	वेद के कान
छंद	वेद के पैर
ज्योतिष	वेद के नेत्र

- इन 6 अंगों को समझने वाला व्यक्ति ही वेदों का सही रूप से उच्चारण, अर्थबोध तथा यज्ञ कार्य कर सकता था।

नोटः- वेदांगों को गद्य में सूत्र रूप में लिखा गया है। इन सभी 6 वेदांगों के नाम तथा क्रम का उल्लेख सर्वप्रथम मुंडक उपनिषद् में मिलता है।

1. **शिक्षा:-** यह उच्चारण का विज्ञान है, जो स्वर एवं व्यंजन के उच्चारण का विधान करता है। इसका विस्तार प्रातिशाख्य ग्रंथों में मिलता है। वेदों की अलग-अलग शाखाओं का उच्चारण बताने के कारण इन्हें 'प्रातिशाख्य' भी कहा जाता है।
2. **कल्प:-** यह मुख्य रूप से वैदिक कर्मकांड का प्रतिपादन करने वाला वेदांग है। कल्प का शाब्दिक अर्थ 'विधान' होता है। कल्प सूत्रों में यज्ञ से संबंधित विधान दिए गए हैं। कल्प के 4 भेद हैं, जोकि निम्नलिखित हैं-
   (i) श्रौतसूत्र
   (ii) गृह्यसूत्र
   (iii) धर्मसूत्र
   (iv) शुल्वसूत्र

- ये चारों भिन्न-भिन्न वेदों हेतु अलग-अलग हैं।

3. **व्याकरण:-** यह वेदों का मुख कहा जाता है। इसे शब्दों की मीमांसा करने वाला शास्त्र-व्याकरण भी कहा गया है, जिसका संबंध भाषा संबंधी नियमों से होता है। इसमें प्रकृति एवं प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युत्पत्ति बताई जाती है।
4. **निरुक्त:-** व्यवस्थित रूप से वैदिक शब्दों का अर्थ समझाना ही निरुक्त का प्रयोजन है। निरुक्त का शाब्दिक अर्थ 'निर्वचन' होता है। निरुक्त वेदार्थ ज्ञान की कुंजी है।
5. **छंद:-** यह पद्यबद्ध वेद मंत्रों के सही उच्चारण हेतु उपयोगी वेदांग है। इससे वैदिक मंत्रों के चरणों का ज्ञान होता है।
6. **ज्योतिष:-** यह काल का निर्धारण करने वाला वेदांग है। वैदिक-यज्ञ काल की अपेक्षा रखते हैं तथा वे किसी निश्चित काल में ही संपादित होते हैं। काल का विभाजन, मुहूर्त का निश्चय, ग्रहों-नक्षत्रों की गति का निर्धारण आदि विषय ज्योतिष के ही हैं।

महाकाव्य

- महाभारत से प्राचीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का पता चलता है।
- महाभारत की रचना महर्षि वेदव्यास ने की थी।
- महाभारत का पुराना नाम 'जयसंहिता' था।
- महाभारत को 'पंचम वेद' भी कहा गया है।
- महाभारत में कुल पर्वों की संख्या 18 है।
- महाभारत का सबसे बड़ा पर्व 'शांति पर्व' है।
- 'भगवद्गीता' महाभारत के छठवें पर्व अर्थात् भीष्म पर्व का ही एक भाग है।

नोट:-
1. भगवद्गीता में स्त्रियों को शूद्र के समकक्ष माना गया है।
2. भगवद्गीता को स्मृति प्रधान भी कहा गया है।

- महाभारत में हस्तिनापुर के कुरु राजवंश का विवरण मिलता है।
- रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी।
- रामायण को भी 'पंचम वेद' कहा गया है।
- रामायण में कुल कांडों की संख्या 7 है।
- रामायण से हमें हिंदुओं एवं यवनों तथा शकों के संघर्ष का विवरण मिलता है।

प्रागैतिहासिक काल

- **प्रागैतिहासिक काल:-** ऐसा काल जिसका कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि इस काल का इतिहास पूर्ण रूप से उत्खनन में प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों पर निर्भर करता है।

पाषाण काल

- पाषाण काल का विभाजन तीन कालों में किया गया हैं-
  1. पुरापाषाण काल या पूर्व पाषाण काल
  2. मध्यपाषाण काल
  3. नवपाषाण काल

पुरापाषाण काल या पूर्व पाषाण काल

- पुरापाषाण संस्कृति का उदय अभिनूतन युग में हुआ था। माना जाता है कि इस युग में धरती बर्फ से ढकी हुई थी।
- पुरापाषाण काल की संस्कृति के अवशेष सोहन नदी घाटी, बेलन नदी घाटी एवं नर्मदा नदी घाटी से मिले हैं।
- मध्य प्रदेश के भोपाल के समीप भीमबेटका नामक चित्रित शैलाश्रयों से भी पुरापाषाण काल की संस्कृति के अवशेष मिले हैं।
- पुरापाषाण काल में हथियारों का आविष्कार एक महत्त्वपूर्ण घटना थी।
- पुरापाषाण काल को मानव के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले पत्थर के औजारों के फलस्वरूप एवं जलवायु में होने वाले परिवर्तन के आधार पर तीन अवस्थाओं में विभाजित किया जाता हैं-
  (i) निम्न पुरापाषाण काल या पूर्व पुरापाषाण काल
  (ii) मध्य पुरापाषाण काल
  (iii) उच्च पुरापाषाण काल

निम्न पुरापाषाण काल या पूर्व पुरापाषाण काल

- सर्वप्रथम इस काल के उपकरण पंजाब (पाकिस्तान) की सोहन नदी घाटी से प्राप्त हुए, जिस कारण इसे सोहन संस्कृति भी कहा जाता है।
- सोहन संस्कृति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वर्ष 1936 में एच. डी टेरा ने किया था।
- इस काल के उपकरणों को दो भागों में विभाजित किया जाता हैं-
  1. चॉपर-चॉपिंग पेबुल संस्कृति
  2. हस्त-कुठार संस्कृति
- चॉपर-चॉपिंग शब्दावली का सर्वप्रथम प्रयोग एच. एल. मोवियस ने किया था।
- चॉपर उपकरण बड़े आकार वाले उपकरण हैं, जो पेबुल से निर्मित थे।
- चॉपिंग उपकरण द्विधारी होते हैं।

- हस्त-कुठार संस्कृति को मद्रासी संस्कृति भी कहा जाता है।
- सर्वप्रथम हस्त-कुठार संस्कृति के उपकरण पल्लवरम् (मद्रास) से रॉबर्ट ब्रूस फूट ने प्राप्त किए थे।
- सोहन संस्कृति एवं मद्रास संस्कृति के इकट्ठे मिलने के प्रमाण चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) से मिले हैं।

निम्न पुरापाषाण काल या पूर्व पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थान:-

- सोहन नदी घाटी (पाकिस्तान के पंजाब में), कश्मीर, थार के रेगिस्तान का कुछ क्षेत्र (राजस्थान के चित्तौड़गढ़ व डीडवाना में), बेलन नदी घाटी, नर्मदा नदी घाटी।

मध्य पुरापाषाण काल

- फलकों (ब्लेड्स) की अधिकता के कारण इस काल को फलक संस्कृति भी कहा जाता है।
- इस काल में खुरचनी तथा वेधक सबसे महत्त्वपूर्ण उपकरण थे, जिस कारण इसे खुरचनी-वेधक संस्कृति भी कहा जाता है।
- इस काल के उपकरण मुख्य रूप से शल्क (फ्लेक) पर आधारित थे।
- एच.डी. सांकलिया ने सर्वप्रथम मध्य पुरापाषाण सांस्कृतिक चरण की खोज नेवासा (महाराष्ट्र) से की थी।
- एच.डी. सांकलिया ने गोदावरी नदी के तट पर स्थित नेवासा (महाराष्ट्र) को मध्य पुरापाषण काल संस्कृति का प्रारूप स्थल घोषित किया है।

मध्य पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थान:-

- नेवासा (महाराष्ट्र), सौराष्ट्र का क्षेत्र (गुजरात), चकिया (उत्तर प्रदेश के वाराणसी में), सिंगरौली बेसिन (उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में), भीमबेटका गुफाएं (मध्य प्रदेश), व्यास-बाणगंगा एवं सिरसा नदी घाटी (हिमाचल प्रदेश)।

उच्च पुरापाषाण काल

- इस काल के प्रमुख उपकरण फलक (ब्लेड) पर आधारित थे। इन उपकरणों के निर्माण में चर्ट, जैस्पर एवं फ्लिण्ट आदि बहुमूल्य पत्थरों का उपयोग होता है।

उच्च पुरापाषाण काल के प्रमुख स्थान:-

- बूढ़ा पुष्कर (राजस्थान), पटणे, भदणे एवं इनामगाँव (महाराष्ट्र), जोगदहा, बाघोर एवं भीमबेटका (मध्य प्रदेश), सिंहभूम (झारखंड), रेनिगुण्टा, वेमुला एवं कुर्नूल में स्थित गुफाएं (आंध्र प्रदेश), शोरापुर दोआब का क्षेत्र (कर्नाटक)।
- आधुनिक स्वरूप वाले मानव अर्थात् होमो सेपियंस का उदय उच्च पुरापाषाण काल की मुख्य विशेषता है।
- उच्च पुरापाषाण काल की एक अन्य विशेषता हड्डी से निर्मित उपकरण ों का प्रचलन है।
- भारत में सर्वप्रथम उच्च पुरापाषाण काल के अवशेष बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश) से मिले हैं।
- भीमबेटका (मध्य प्रदेश) में गुफा चित्रकला का प्रारंभ उच्च पुरापाषाण काल में ही हुआ था।

मध्यपाषाण काल

- भारत में मध्यपाषाण काल होलोसिन युग के साथ प्रारंभ हुआ था।
- मध्यपाषाण काल के उपकरण अत्यंत छोटे होते थे, जिस कारण इन्हें माइक्रोलिथ कहा गया है।
- भारत में सर्वप्रथम मध्यपाषाण काल के उपकरणों की खोज सी.एल. कार्लाइल ने विंध्य के क्षेत्र से की थी।
- मध्यपाषाण काल के उपकरण चौल्सेडोनी से निर्मित हैं तथा औजार बनाने की तकनीक फ्लूटिंग कहलाती है।
- मध्यपाषाण काल के प्रमुख केंद्र बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश), नेवासा (महाराष्ट्र), सोन नदी घाटी (मध्य प्रदेश), कृष्णा घाटी (कर्नाटक) आदि हैं।
- मध्यपाषाण काल के लोगों ने सर्वप्रथम कुत्ते को अपना पालतू पशु बनाया था।
- बागोर (भीलवाड़ा,राजस्थान) एवं आदमगढ़ (होशंगाबाद, मध्य प्रदेश) से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- मध्य प्रदेश में स्थित भीमबेटका की गुफाओं से मध्यपाषाण काल के उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- भारत में मानव अस्थि-पंजर का सर्वप्रथम अवशेष प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) के महदहा एवं सराय नाहर राय से प्राप्त हुआ है, जोकि मध्यपाषाण काल का है।
- सर्वप्रथम बूचड़खाने का साक्ष्य महदहा (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुआ है।
- मध्यपाषाण काल के संदर्भ में हड्डी से निर्मित आभूषण भारत में महदहा (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं।
- एक ही कब्र से चार मानव कंकाल सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं।
- लेखहिया पुरास्थल (उत्तर प्रदेश) से सर्वाधिक मानव कंकाल एवं दमदमा पुरास्थल (उत्तर प्रदेश) से सर्वाधिक शवाधान प्राप्त हुए हैं।
- एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल दमदमा (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं।
- झोंपड़ी का विस्तृत साक्ष्य चोपानी माण्डो (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुआ है।
- चित्रयुक्त शैलाश्रय मोरहना पहाड़ (उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं। इन चित्रयुक्त शैलाश्रय में दो रथों के चित्र मिले हैं।
- भारत में मध्यपाषाण काल के सूक्ष्म पाषाण उपकरणों के सर्वोत्तम नमूने लंघनाज (गुजरात) से प्राप्त हुए हैं।
- लोटेश्वर (गुजरात) से भी पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल) से अनेक भू-छिद्र (गड्ढे) प्राप्त हुए हैं।
- टेरी समूह (तमिलनाडु) से मध्यपाषाण काल के बालू के टीले तथा चर्ट एवं फ्लिण्ट से निर्मित अनेक उपकरण प्राप्त हुए हैं।

मध्यपाषाण काल के प्रमुख स्थान:-

- बागोर (राजस्थान), आदमगढ़ एवं भीमबेटका (मध्य प्रदेश), लंघनाज एवं लोटेश्वर (गुजरात), बीरभानपुर (पश्चिम बंगाल), टेरी समूह (तमिलनाडु), महदहा, सराय नाहर राय, लेखहिया, दमदमा, चोपानी माण्डो, मोरहना पहाड़ (उत्तर प्रदेश)।

नवपाषाण काल

- नवपाषण शब्द प्रथम बार जॉन लुब्बाक के द्वारा प्रयोग में लाया गया था।
- नवपाषाण काल का प्रमुख औजार पत्थर की कुल्हाड़ी है।
- नवपाषाण काल के उपकरण पॉलिश किए गए पत्थरों से निर्मित हैं।
- कृषि का प्रारंभ सर्वप्रथम नवपाषाण काल में हुआ था।
- नाव का निर्माण सर्वप्रथम नवपाषाण काल में प्रारंभ हुआ था।
- मृद्भांड सर्वप्रथम नवपाषाण काल में बनने लगे थे।
- भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाण काल की प्राचीनतम बस्ती मेहरगढ़ (पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में स्थित) है।
- मेहरगढ़ से पशुपालन एवं कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- मेहरगढ़ से पालतू भैंस का प्राचीनतम साक्ष्य भी प्राप्त हुआ है।
- भारत में नवपाषाण काल के प्रथम स्थल की खोज टोंस नदी घाटी (उत्तर

प्रदेश) में हुई है।

- नवपाषाण काल के प्रमुख केंद्र बेलन नदी घाटी (उत्तर प्रदेश), सोन नदी घाटी (मध्य प्रदेश), सिंहभूम (झारखंड), रेनिगुण्टा (आंध्र प्रदेश) आदि हैं।
- बुर्जहोम (कश्मीर) में कब्र में पालतू कुत्तों एवं भेड़ियों को मालिक के शव के साथ ही दफनाया जाता था।
- कश्मीर में स्थित नवपाषाण काल के स्थलों बुर्जहोम एवं गुफकराल से अनेक गर्तावास, मृद्भांड तथा हड्डी के औजार मिले हैं।
- चावल (धान) का प्राचीनतम साक्ष्य कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश के प्रयागराज) से प्राप्त हुआ है।
- महगडा (उत्तर प्रदेश) से भी चावल (धान) की खेती के प्रमाण मिले हैं।
- कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश के प्रयागराज) से नवपाषाण काल के साथ ही ताम्र एवं लौह काल की संस्कृति के अवशेष भी मिले हैं।
- महगडा (उत्तर प्रदेश) से गौशाला का साक्ष्य तथा पशुबाड़ा प्राप्त हुआ है।
- चिरांद (बिहार) से अत्यधिक मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए हैं, जोकि मुख्यत: हिरण के सींगों से निर्मित हैं।
- दक्षिण भारत में नवपाषाण काल का प्रमुख स्थान बेल्लारी (कर्नाटक) है। बेल्लारी (कर्नाटक) अनेक नवपाषाण काल के स्थलों संगनकल्लू, बुदिहल, टेक्कलकोट आदि के लिए प्रसिद्ध है।
- सर्वप्रथम नवपाषाण काल के साक्ष्य दक्षिण भारत में संगनकल्लू (कर्नाटक) एवं नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश) से प्राप्त हुए हैं।
- बुदिहल (कर्नाटक) से सामुदायिक भोज/उत्सव का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- टेक्कलकोट (कर्नाटक) से कान की बालियाँ (सोने की लटकन) मिली है।
- कर्नाटक में स्थित नवपाषाण काल के स्थलों मास्की एवं पिक्कलीहल से राख के टीले (भस्म टीले) प्राप्त हुए हैं।

भारत में स्थित नवपाषाण काल के प्रमुख स्थान:-

- बुर्जहोम एवं गुफकराल (कश्मीर), कोल्डिहवा एवं महगडा (उत्तर प्रदेश), चिरांद (बिहार), संगनकल्लू एवं पिक्कलीहल (कर्नाटक), नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश)।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- आग का आविष्कार **पुरापाषाण काल** में हुआ था।
- पहिए का आविष्कार **नवपाषाण काल** में हुआ था।
- कृषि का आविष्कार **नवपाषाण काल** में हुआ था।
- मनुष्य ने घर बनाने की प्रवृत्ति **नवपाषाण काल** में सीखी।
- मनुष्य ने सबसे पहले **कुत्ते** को अपना पालतू पशु बनाया।
- पुरापाषाण काल में मानव की जीविका का मुख्य आधार **शिकार** था।
- **पुरापाषाण काल** में पत्थर के औजार सबसे पहले पाए गए थे।
- **भीमबेटका,** पुरापाषाण काल का एक प्रसिद्ध स्थल मध्य प्रदेश में स्थित है।
- उच्च पुरापाषाणकालीन हड्डी की बनी मातृदेवी की प्रतिमा **बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश)** से प्राप्त हुई है।
- प्राचीन भारतीय इतिहास के **नवपाषाण काल** में मिट्टी के बर्तनों का पता लगाया गया था।
- मनुष्य ने सबसे पहले **तांबा** धातु का प्रयोग किया।
- मनुष्य द्वारा प्रयोग किया जाने वाला प्रथम औजार **कुल्हाड़ी** था।
- मनुष्य द्वारा बोई गई सबसे पहली फसल **जौ (यव)** थी।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- **अर्थशास्त्र** पुस्तक के लेखक **चाणक्य** है। इसे **कौटिल्य** तथा **विष्णुगुप्त** के नाम से भी जाना जाता है।
- **अर्थशास्त्र** पुस्तक मूलत: **राजनीति शास्त्र** से संबंधित है। इसमें मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी वर्णित हैं।
- **राजतरंगिणी** पुस्तक के लेखक **कल्हण** है। इसमें कश्मीर के राजाओं का इतिहास वर्णित है।
- **अष्टाध्यायी** पुस्तक के लेखक **पाणिनी** है। यह एक संस्कृत व्याकरण ग्रंथ है।
- कथासरित्सागर **(रचनाकार - सोमदेव)** साहित्यिक कृति मूल रूप से संस्कृत भाषा में लिखी गई थी।
- तमिल भाषा में सबसे प्राचीन महाकाव्य **शिलप्पादिकारम् (रत्नजड़ित पायल)** पाँचवीं-छठी शताब्दी ईस्वी में इलंगो आदिगल द्वारा लिखा गया था।

प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ एवं उनके लेखक

प्रमुख रचना	लेखक	विषय-वस्तु
अष्टाध्यायी	पाणिनि	एक व्याकरण ग्रंथ
महाभाष्य	पतंजलि	पुष्यमित्र शुंग के बारे में जानकारी।
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	शुंग वंश के बारे में जानकारी।
अर्थशास्त्र	चाणक्य/ कौटिल्य	मौर्य काल के बारे में जानकारी।
बृहत्कथामंजरी	क्षेमेंद्र	मौर्य काल के बारे में जानकारी।
कथासरित्सागर	सोमदेव	मौर्य काल के बारे में जानकारी।
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त	मौर्य काल के बारे में पर्याप्त जानकारी।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	गुप्त काल के समाज के बारे में जानकारी।
नीतिसार	कामंदक	गुप्त काल के राजतंत्र के बारे में जानक. ारी।
हर्षचरित	बाणभट्ट	हर्षवर्द्धन की उपलब्धियों के बारे में जानकारी।
रामचरित	संध्याकर नंदी	बंगाल के शासक रामपाल के जीवन के बारे में जानकारी।
राजतरंगिणी	कल्हण	कश्मीर के राजवंश के बारे में क्रमबद्ध जानकारी।
पृथ्वीराजरासो	चंदबरदाई	पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान) की उप. लब्धियों के बारे में जानकारी।

2 सिन्धु घाटी की सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता

सिन्धु घाटी की सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता नामकरण, काल

निर्धारण, भौगोलिक विस्तार एवं निर्माता

- सर्वप्रथम हड़प्पा के टीलों की ओर वर्ष 1826 में चार्ल्स मैसेन ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। 1850 के दशक के दौरान हड़प्पा के टीलों का सर्वे अलेक्जेंडर कनिंघम ने किया था।
- इस सभ्यता हेतु सिन्धु घाटी की सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता नाम प्रयोग होता है। लेकिन इस सभ्यता के अधिकांश केंद्रों का उत्खनन सिन्धु नदी घाटी क्षेत्र से बाहर भी हुआ है, तो सिन्धु घाटी की सभ्यता इस सभ्यता हेतु उपर्युक्त नाम नहीं रहा।
- सर्वप्रथम वर्ष 1921 में राय बहादुर दया राम साहनी ने भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल के निर्देशन में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के मोंटगोमरी जिले में रावी नदी के बाएं तट पर स्थित इस सभ्यता के प्रथम स्थल हड़प्पा का अन्वेषण किया था। इसी स्थल के नाम पर इस सभ्यता का नाम हड़प्पा सभ्यता भी रखा गया है।
- पुरातत्त्व की एक परंपरा के अनुसार, किसी भी सभ्यता का नामकरण उस सभ्यता के प्रथम उत्खनित स्थल के नाम पर होता है। इसी कारण इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा गया है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का सर्वाधिक संकेंद्रण सरस्वती नदी घाटी में घग्गर-हाकरा नदी के तट पर स्थित है। इसलिए कुछ विद्वान इस सभ्यता को सिन्धु-सरस्वती सभ्यता या सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) को सैंधव सभ्यता भी कहा गया है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) को तृतीय कांस्ययुगीन सभ्यता भी कहा जाता है।

  नोट:- दो अन्य कांस्ययुगीन सभ्यता मिस्र की सभ्यता एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता थी।
- हड़प्पावासी ताँबे तथा टिन को मिश्रित करके काँसे का निर्माण करते थे।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप में भारत, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान तीन देशों तक ही था।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का विस्तार भारत में जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र में हुआ।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के अधिकांश खोजे गए स्थल भारत में स्थित हैं।
- भारत के गुजरात राज्य में सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के सर्वाधिक स्थल स्थित हैं।
- वर्ष 1922 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में ही पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाएं तट पर स्थित मोहनजोदड़ो की खोज राखल दास बैनर्जी ने की थी।
- सर्वप्रथम वर्ष 1931 में सर जॉन मार्शल ने सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की तिथि निर्धारित की थी।
- रेडियो कार्बन-14 (C-14) जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का काल निर्धारण लगभग 2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. माना गया है। माना जाता है कि यह सभ्यता लगभग 400 से 500 वर्षों तक विद्यमान रही और यह सभ्यता लगभग 2200 ई.पू. से 2000 ई.पू. के मध्य तक अपनी परिपक्वावस्था में थी। एक नवीन शोध में यह भी पाया गया कि यह सभ्यता लगभग 8000 वर्ष पुरानी है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का क्षेत्र अत्यंत व्यापक था। यह सभ्यता त्रिभुजाकार स्वरूप में थी। इस सभ्यता का क्षेत्रफल लगभग 13 लाख वर्ग किमी. है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का भौगोलिक विस्तार पूर्व में आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) से लेकर पश्चिम में सुत्कागेंडोर (बलूचिस्तान) तक तथा उत्तर में मांडा (जम्मू-कश्मीर) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी के मुहाने पर स्थित दैमाबाद (महाराष्ट्र) तक था।

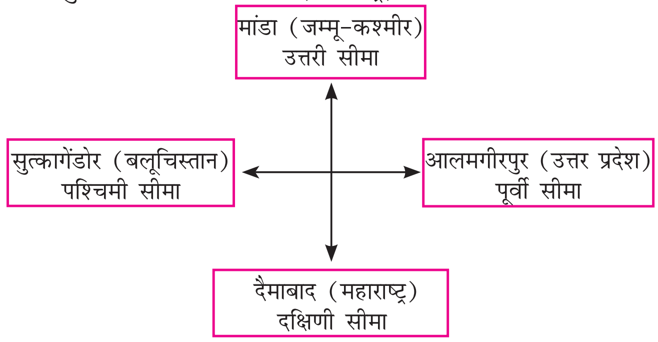

- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण लगभग 1100 किमी. तक विस्तृत थी।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के निर्माताओं के निर्धारण का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत उत्खनन से प्राप्त हुए मानव कंकाल है। सर्वाधिक मानव कंकाल मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुए हैं। इन मानव कंकाल के परीक्षण से यह निर्धारित हुआ कि इस सभ्यता के अंतर्गत मुख्य रूप से चार प्रकार की प्रजातियाँ निवास करती थी, जोकि निम्नलिखित हैं-
  1. भूमध्य-सागरीय **(सर्वाधिक)**
  2. प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड
  3. अल्पाइन
  4. मंगोलॉयड
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोग मुख्यत: भूमध्य-सागरीय थे।

प्रमुख विद्वान	विद्वानों के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता के निर्माता
डॉ. लक्ष्मण स्वरूप	आर्य
गॉर्डन चाइल्ड	सुमेरियन
मॉर्टिमर व्हीलर	दास एवं दस्यु
राखल दास बैनर्जी	द्रविड़

नोट:- किन्तु अधिकतर विद्वान प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर द्रविड़ को ही सिन्धु घाटी सभ्यता का निर्माता मानते हैं।

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की नगर योजना

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) कांस्ययुगीन सभ्यता के साथ ही एक नगरीय सभ्यता भी थी। इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता पर्यावरण के अनुकूल इसका अद्भुत नगर नियोजन एवं जल निकास प्रणाली थी। मुख्य सड़कें उत्तर से दक्षिण की ओर जाती हैं। इसकी सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी। नगर की मुख्य सड़क को प्रथम सड़क कहा गया है। नगरों में प्रवेश पूर्वी सड़क से होता था। इस सभ्यता के अंतर्गत लगभग सभी नगर दो भागों में विभाजित थे, जोकि निम्नलिखित हैं-

1. **प्रथम भाग** जिसमें ऊँचे दुर्ग निर्मित थे। इन दुर्गों में शासक वर्ग निवास करता था।
2. **द्वितीय भाग** जिसमें से नगर अथवा आवास क्षेत्र के साक्ष्य प्राप्त हुए

हैं, यह अपेक्षाकृत आकार में बड़े थे। यहाँ आमतौर पर एक सामान्य नागरिक, व्यापारी, शिल्पकार, कारीगर एवं श्रमिक वर्ग रहता था।

- यहाँ सड़कों के किनारे की नालियाँ ऊपर से ढकी होती थी। घरों का गंदा पानी इन्हीं नालियों के माध्यम से होता हुआ नगर की मुख्य नाली में गिरता था।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के प्रमुख स्थलों हड़प्पा, मोहनजोदड़ो एवं कालीबंगा की नगर योजना लगभग एक जैसी थी। अधिकांश स्थलों पर भवनों के निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग किया गया हैं।
- रंगपुर (गुजरात) एवं कालीबंगा (राजस्थान) में भवनों के निर्माण में कच्ची ईंटों का उपयोग किया गया हैं।
- यहाँ आमतौर पर प्रत्येक घर में एक आंगन, एक रसोईघर एवं एक स्नानागार होता था। यहाँ अधिकांश घरों में से कुएं के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल स्नानागार सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का अद्‌भुत निर्माण है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार है।
- विशाल भवन हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की विशेषता बतलाते हैं। सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के नगरों के चारों ओर एक रक्षा प्राचीर निर्मित करके किलेबंदी की गई थी, इसको निर्मित करने का मुख्य उद्देश्य नगर को चोर-लुटेरों तथा पशुदस्युओं (पशु चोरों) से सुरक्षित करना था।
- केवल लोथल (गुजरात) तथा सुरकोटदा (गुजरात) के दुर्ग और नगर एक ही रक्षा प्राचीर से घिरे थे।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के अधिकांश स्थलों के घरों के दरवाजे तथा खिड़कियाँ मुख्य सड़क पर नहीं खुलकर गलियों में खुलती थी, परन्तु लोथल (गुजरात) इसका अपवाद है। लोथल (गुजरात) में घरों के दरवाजे तथा खिड़कियाँ मुख्य सड़क की ओर खुलती थी।
- मकान के निर्माण में अनेक प्रकार की ईंटों का उपयोग किया जाता था, जिसमें ईंटों के आकार का अनुपात **4 : 2 : 1** था।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की सबसे बड़ी ईंट मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई है।

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के प्रमुख स्थल

हड़प्पा

1920 के दशक में माधोस्वरूप वत्स और 1940 के दशक में मॉर्टिमर व्हीलर ने हड़प्पा का व्यापक स्तर पर उत्खनन कार्य कराया था।

- एस.आर. राव ने हड़प्पा सभ्यता को 'विश्व के प्रथम महान साम्राज्य' की संज्ञा दी है।
- हड़प्पा को 'तोरणद्वार का नगर' भी कहा जाता है।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा को 'अर्द्ध-औद्योगिक नगर' की संज्ञा दी है।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को 'एक विशाल साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानियाँ' की संज्ञा दी है।
- हड़प्पा के निवासियों का अधिकांश भाग व्यापार एवं धर्म संबंधित कार्यों में संलग्न रहता था।
- हड़प्पा के दो टीलों में पूर्वी टीले को 'नगर टीला' एवं पश्चिमी टीले को 'दुर्ग टीला' कहा गया है।
- हड़प्पा नगर की रक्षा हेतु पश्चिम में एक दुर्ग का निर्माण किया गया था। माना जाता है कि यह दुर्ग उत्तर से दक्षिण तक लगभग 415 मीटर लंबा एवं पूर्व से पश्चिम तक लगभग 195 मीटर चौड़ा था। यह दुर्ग जिस टीले पर निर्मित है उसे मॉर्टिमर व्हीलर ने 'माउंड ए-बी' की संज्ञा दी है।
- हड़प्पा के अधिकांश घरों में से शौचालय के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्रसाधन मंजूषा के अवशेष हड़प्पा से प्राप्त हुए हैं।
- लकड़ी के ताबूत में शवाधान (विदेशी की कब्र) का साक्ष्य हड़प्पा से प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें प्राप्त हुई हैं।
- पुरुष के धड़ की पाषाण मूर्ति (नरबंधक प्रस्तर) हड़प्पा से प्राप्त हुई है।
- पीतल की इक्का गाड़ी हड़प्पा से प्राप्त हुई है।
- हड़प्पा से 16 ताम्र भट्ठियाँ प्राप्त हुई हैं।
- हड़प्पा से दो पाषाण मूर्ति काले पत्थर की नर्तक की मूर्ति तथा लाल पत्थर की मानव मूर्ति प्राप्त हुई हैं।
- हड़प्पा से ईंटों से निर्मित वृत्ताकार चबूतरे एवं अन्न कूटन के चबूतरे भी प्राप्त हुए हैं।
- हड़प्पा से मजदूरों हेतु बैरक (श्रमिक आवास) तथा कर्मचारियों हेतु आवास के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- हड़प्पा से एक स्त्री के गर्भ से निकलते हुए पौधे वाली मृण्मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसे सर जॉन मार्शल ने 'पृथ्वी माता' की संज्ञा दी है।
- हड़प्पा के आवास क्षेत्र के दक्षिण में एक कब्रिस्तान स्थित है, जिसका नामकरण कब्रिस्तान आर-37 से किया गया है।

मोहनजोदड़ो

1930 के दशक में अर्नेस्ट मैके और 1940 के दशक में मॉर्टिमर व्हीलर ने मोहनजोदड़ो का व्यापक स्तर पर उत्खनन कार्य कराया था।

- सिन्धी भाषा में मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' होता है।
- मोहनजोदड़ो के प्रमुख उपनाम सिन्ध का नखलिस्तान, सिन्ध का बाग, रेगिस्तान का बगीचा हैं।
- मोहनजोदड़ो की शासन-व्यवस्था जनतंत्रात्मक थी।
- मोहनजोदड़ो में जाल पद्धति (ग्रिड पैटर्न) पर समानांतर सड़कों का जाल बिछा हुआ था।
- मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक चौड़ी सड़क प्राप्त हुई, यह सड़क लगभग 10 मीटर चौड़ी थी।
- मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत विशाल अन्नागार है। विशाल अन्नागार लगभग 45.71 मीटर लंबा एवं लगभग 15.23 मीटर चौड़ा है।
- मोहनजोदड़ो में विशाल अन्नागार किले के अंदर स्थित था।
- मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल विशाल स्नानागार है। इस विशाल स्नानागार के केंद्रीय खुले प्रांगण के मध्य एक जलाशय (तालाब) बना है। इस विशाल स्नानागार के उत्तर तथा दक्षिण पार्श्व में जलाशय (तालाब) में उतरने के लिए सीढ़ियाँ निर्मित थी। इस विशाल स्नानागार का निर्माण धार्मिक उद्देश्यों हेतु हुआ था। माना जाता है कि इस विशाल स्नानागार के निर्माण में बिटुमिन का उपयोग किया गया था। सर जॉन मार्शल ने इस विशाल स्नानागार को 'तत्कालीन विश्व का एक आश्चर्यजनक निर्माण' कहा है। यह विशाल स्नानागार लगभग 11.89 मीटर लंबा, लगभग 7.01 मीटर चौड़ा एवं लगभग 2.44 मीटर गहरा है। इस विशाल स्नानागार को सिन्धु घाटी की सभ्यता की सबसे सुंदर कृति

माना जाता है।

- मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक मुहरें प्राप्त हुई हैं।
- सर जॉन मार्शल ने मोहनजोदड़ो से प्राप्त पत्थर की नृत्यरत आकृति को 'नटराज शिव' कहा है।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में भवनों के निर्माण में सामान्यत: पक्की ईंटों का उपयोग किया गया हैं।
- मोहनजोदड़ो से नाव के चित्र अथवा मॉडल प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो से चाँदी के बर्तन में कपड़े के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो से काँसे की नर्तकी की एक मूर्ति पाई गई है, इस मूर्ति को 'द्रवी मोम विधि' के द्वारा बनाया गया है।
- मोहनजोदड़ो से मुद्रा पर अंकित पशुपतिनाथ (शिव) की मूर्ति प्राप्त हुई है।

चन्हूदड़ो

चन्हूदड़ो पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज एन.जी. मजूमदार ने की थी तथा यहाँ पर उत्खनन कार्य अर्नेस्ट मैके ने कराया था।

- चन्हूदड़ो को सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का औद्योगिक केंद्र माना जाता था।
- चन्हूदड़ो से वक्राकार ईंटों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- चन्हूदड़ो से गुरिया निर्माण का कारखाना प्राप्त हुआ है।
- चन्हूदड़ो मनका बनाने का एक प्रमुख केंद्र था।
- चन्हूदड़ो से किसी दुर्ग का अस्तित्व प्राप्त नहीं हुआ है।
- चन्हूदड़ो से झूकर एवं झाँगर संस्कृति के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

लोथल

लोथल भारत के गुजरात राज्य के अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के तट पर स्थित है। इसकी खोज एस.आर. राव ने की थी।

- लोथल को लघु हड़प्पा तथा लघु मोहनजोदड़ो भी कहा जाता है।
- लोथल सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का एक प्रमुख बंदरगाह था, यहाँ से सुगमतापूर्वक पश्चिमी एशिया से व्यापार होता था।
- लोथल के पूर्वी भाग से जहाज की गोदी (डॉक-यार्ड) प्राप्त हुई है। यह पक्की ईंटों से निर्मित है। इसका आकार लगभग 214 मीटर लंबा, लगभग 36 मीटर चौड़ा एवं लगभग 3.3 मीटर गहरा है।
- लोथल का गोदीबाड़ा सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की सबसे बड़ी संरचना है।
- लोथल से भी नाव के चित्र अथवा मॉडल प्राप्त हुए हैं।
- लोथल में नगर को दो भागों में विभाजित नहीं करके, एक ही रक्षा प्राचीर से संपूर्ण नगर को दुर्गीकृत किया गया था।
- लोथल से चावल (धान) का प्रथम साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- लोथल से फारस की मुहर तथा पक्के रंग में रंगे हुए पात्रों के मिलने का प्रमाण भी प्राप्त हुआ है।
- लोथल से तीन युगल समाधियाँ प्राप्त हुई हैं।

कालीबंगा

कालीबंगा भारत के राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के बाएं तट पर स्थित है। इसकी खोज अमलानंद घोष ने की थी तथा यहाँ पर उत्खनन कार्य बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर ने कराया था।

- कालीबंगा के उत्खनन से हड़प्पाकालीन संस्कृति के पाँच स्तर प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' होता है।
- कालीबंगा से जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा में एक फर्श से अलंकृत ईंटों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा से 7 आयताकार अग्निकुंड/अग्निवेदिकाएँ प्राप्त हुई हैं।
- कालीबंगा में भवनों के निर्माण में कच्ची ईंटों का उपयोग किया गया हैं।
- कालीबंगा में दुर्ग क्षेत्र तथा नगर क्षेत्र दोनों अलग-अलग रक्षा प्राचीर से घिरे हुए थे।
- कालीबंगा में स्पष्ट रूप से जल निकास प्रणाली का अभाव था।
- कालीबंगा में शवों के अंत्येष्टि संस्कार के लिए तीन विधियों के प्रमाण मिलते हैं, जोकि निम्नलिखित हैं-
  1. पूर्ण समाधिकरण
  2. आंशिक समाधिकरण
  3. दाह-संस्कार
- कालीबंगा से प्रतीकात्मक समाधि भी प्राप्त हुई है।
- कालीबंगा से बेलनाकार मुहरें प्राप्त हुई हैं।

बनावली

बनावली भारत के हरियाणा राज्य के फतेहाबाद जिले में स्थित है। इसकी खोज आर.एस. बिष्ट ने की थी। माना जाता है कि बनावली समृद्ध लोगों का एक नगर था।

- बनावली से हड़प्पाकालीन संस्कृति के तीन स्तर प्राक् सैंधव, विकसित सैंधव एवं उत्तर सैंधव संस्कृतियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- बनावली में भी स्पष्ट रूप से जल निकास प्रणाली का अभाव था।
- बनावली से जौ (यव) के अवशेष प्राप्त हुए है।
- बनावली से खिलौने के रूप में हल की आकृति/मिट्टी का हल (हल का टेराकोटा मॉडल) प्राप्त हुआ है।

धौलावीरा

धौलावीरा भारत के गुजरात राज्य के कच्छ जिले में स्थित है। इसकी खोज जे.पी. जोशी ने की थी तथा यहाँ पर उत्खनन कार्य आर.एस. बिष्ट ने कराया था।

- धौलावीरा भारत में खोजा गया दूसरा सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन नगर है।
- धौलावीरा को सफेद कुआँ तथा आयताकार नगर भी कहा जाता है।
- धौलावीरा को सात सांस्कृतिक चरणों में विभाजित किया गया है।
- धौलावीरा से सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का एकमात्र खेल का मैदान (स्टेडियम) प्राप्त हुआ है।
- धौलावीरा से एक सूचना पट्ट (साइन बोर्ड) भी प्राप्त हुआ है, जिसमें 10 अक्षर हैं।
- धौलावीरा से उत्कृष्ट जल प्रबंधन/कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- धौलावीरा तीन भागों में विभाजित था, जोकि निम्नलिखित हैं-
  1. दुर्ग भाग
  2. मध्यम नगर
  3. निचला नगर
- धौलावीरा के मध्यम नगर में शासक एवं अधिकारी वर्ग निवास करते थे।
- धौलावीरा के अतिरिक्त अन्य हड़प्पाकालीन नगर केवल दो भागों में ही विभाजित थे।
- धौलावीरा के अतिरिक्त अन्य हड़प्पाकालीन नगरों के पश्चिमी भाग में स्थित दुर्ग में प्रशासनिक अथवा धार्मिक क्रियाकलाप आयोजित किए जाते थे।

राखीगढ़ी

राखीगढ़ी को प्राक्-हड़प्पा स्थल माना जाता है। यह भारत के हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है तथा सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के पाँच सबसे बड़े नगरों में से एक है।

- राखीगढ़ी भारत में खोजा गया सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन नगर है।
- राखीगढ़ी से अन्नागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं

रोपड़

रोपड़ भारत के पंजाब राज्य में सतलज नदी के बाएं तट पर स्थित है तथा 1950 के दशक में इसका उत्खनन कार्य यज्ञदत्त शर्मा ने कराया था।

- रोपड़ स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में खोजा गया तथा उत्खनित प्रथम स्थल है।
- रोपड़ से मानव की कब्र के साथ कुत्ते के शवाधान के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के प्रमुख स्थल

क्र.सं.	प्रमुख स्थल	अवस्थिति	नदी का नाम
1.	हड़प्पा	पाकिस्तान	रावी
2.	मोहनजोदड़ो	पाकिस्तान	सिन्धु
3.	चन्हूदड़ो	पाकिस्तान	सिन्धु
4.	लोथल	गुजरात	भोगवा
5.	कालीबंगा	राजस्थान	घग्गर
6.	बनावली	हरियाणा	–
7.	धौलावीरा	गुजरात	–
8.	राखीगढ़ी	हरियाणा	–
9.	रोपड़	पंजाब	सतलज
10.	रंगपुर	गुजरात	भादर
11.	सुरकोटदा	गुजरात	–
12.	सुत्कागेंडोर	पाकिस्तान	दाश्क
13.	आलमगीरपुर	मेरठ	हिंडन

प्रमुख स्थल	उत्खननकर्ता	प्राप्त मुख्य वस्तुएँ तथा अवशेष
हड़प्पा	राय बहादुर दया राम साहनी	• लाल बलुआ पत्थर से बना पुरुष • लिंग-योनी के पोषण प्रतीक • लकड़ी की ओखली में गेहूँ तथा जौ • पासा, ताम्र तुला तथा दर्पण • विशाल चबूतरे वाले 6-6 अन्नागारों की दो कतारें • कांस्य से निर्मित हिरण का पीछा करते हुए कुत्ते की मूर्ति • कब्रिस्तान R-37 • शंख से निर्मित बैल • स्वास्तिक तथा चक्र के साक्ष्य • सीपी का पैमाना
मोहनजोदड़ो	राखल दास बैनर्जी	• विशाल स्नानागार, अन्नागार • दाढ़ी वाले पुजारी की मूर्ति • नर्तकी की कांस्य मूर्ति • पशुपति मोहर • गीली मिट्टी के दीए के साक्ष्य • सीपी से बनी हुई पटरी • मिट्टी का तराजू • सबसे बड़ी ईंट का साक्ष्य • भट्टों के अवशेष
चन्हूदड़ो	अर्नेस्ट मैके	• चार पहिए वाली गाड़ी • मनके बनाने का कारखाना • वक्राकार ईंटें • अलंकृत हाथी • कंघा
लोथल	एस.आर. राव	• फारस की मुहर • बन्दरगाह • धान तथा बाजरे के साक्ष्य • तीन युगल समाधियाँ • दिशा-मापक यंत्र • ताँबे का कुत्ता • धान की भूसी
कालीबंगा	बी.बी. लाल एवं बी.के. थापर	• आयताकार 7 अग्नि-वेदिकाएँ • जुते हुए खेत के साक्ष्य • बेलनाकार मुहरें • मिट्टी के मनके, काँच तथा मिट्टी की चूड़ियाँ • सिलबट्टा • प्रतीकात्मक समाधियाँ • सूती कपड़े की छाप
बनावली	आर.एस. बिष्ट	• हल की आकृति वाला मिट्टी का खिलौना • ताँबे के बाणाग्र

हड़प्पाई लिपि

हड़प्पाई लिपि का सबसे पुराना नमूना वर्ष 1853 में मिला था। इस लिपि को पढ़ने का सर्वप्रथम प्रयास 1920 के दशक में एल.ए. वेडेन ने किया था, परन्तु अभी तक इस लिपि को पढ़ने में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त नहीं हुई है। यह लिपि 'भावचित्रात्मक' थी, जो दाईं ओर से बाईं ओर लिखी जाती थी। इस पद्धति को 'बूस्ट्रोफेडन' कहा गया है।

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) में जीवन की दशाएँ

राजनीतिक दशा

हड़प्पाकालीन राजनीतिक संगठन का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। इसके बारे में इतिहासकारों के भी अलग-अलग मत हैं।

- कुछ इतिहासकारों का मत है कि, इस काल में लोग वाणिज्य एवं व्यापार की ओर अधिक आकर्षित थे, इससे यह प्रतीत होता है कि संभवत: हड़प्पा की शासन-व्यवस्था व्यापारी वर्ग (वणिक वर्ग) के हाथों में थी।
- कुछ इतिहासकारों का मत है कि, हड़प्पा सभ्यता का व्यापक विस्तार तथा

इसके सुनियोजित नगरों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस सभ्यता में शासन-व्यवस्था पर पुरोहित वर्ग का प्रभाव था।

- ए.एल. बाशम ने सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की प्रकृति को धर्मतंत्रीय तथा इस पर पुरोहित वर्ग का प्रभाव माना था।
- स्टुअर्ट पिग्गट ने सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की शासन-व्यवस्था को अत्यंत केंद्रीकृत साम्राज्य माना है, जो पुरोहित वर्ग के द्वारा संचालित थी।
- हंटर के अनुसार, मोहनजोदड़ो की शासन-व्यवस्था राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक थी।
- व्हीलर के अनुसार, सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) में मध्यमवर्गीय जनतंत्रात्मक शासन-व्यवस्था तथा धर्म की महत्ता थी।

आर्थिक दशा

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के उत्कर्ष का एक प्रमुख कारण उन्नत कृषि एवं व्यापार था। हड़प्पाकालीन अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से सिंचित कृषि, पशुपालन, समृद्ध आंतरिक एवं विदेशी व्यापार पर आधारित थी। यह व्यापार वस्तु-विनिमय के माध्यम से होता था।

- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) मुख्यतः व्यापार प्रधान थी, लेकिन अर्थव्यवस्था एवं आजीविका का मुख्य आधार कृषि ही था।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का अधिकांश भौगोलिक विस्तार अर्द्धशुष्क क्षेत्र में था तथा इस सभ्यता की उर्वरता का प्रमुख कारण प्रतिवर्ष सिन्धु नदी में आने वाली बाढ़ को माना जाता है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा अन्य नगरों से प्राप्त अन्नागार के साक्ष्य कृषि की विकसित अवस्था को इंगित करते हैं।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का व्यापार केवल सिन्धु नदी घाटी के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था, अपितु व्यापार मध्य एशिया, मिस्र एवं मेसोपोटामिया तक विस्तृत था। माना जाता है कि व्यापार की स्थिति सिन्धु घाटी की सभ्यता और मेसोपोटामिया के मध्य उन्नत अवस्था में थी। मेसोपोटामिया के मेलुहा, ढिलमुन तथा मगन के साथ अच्छे व्यापारिक संबंध थे।

  नोटः- सिन्धु क्षेत्र का प्राचीन नाम 'मेलुहा' है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोग गेहूँ, जौ (यव), राई, मटर, तिल, कपास इत्यादि की खेती किया करते थे। **नोटः-** इस सभ्यता के लोग रागी तथा ईख से परिचित नहीं थे।
- सर्वप्रथम कपास पैदा करने का श्रेय सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोगों को दिया जाता है। इसलिए यूनानियों ने इसे सिंडन/सिंडोन (जिसकी उत्पत्ति सिन्ध से हुई है) नाम दिया है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोगों का प्रमुख खाद्यान्न गेहूँ एवं जौ (यव) था। माना जाता है कि गेहूँ एवं जौ (यव) का प्रसार पश्चिमी एशिया से हुआ था।
- हड़प्पा सभ्यता में कोई हल अथवा फावड़ा प्राप्त नहीं हुआ है, संभवतः इस सभ्यता के लोग लकड़ी के हलों का प्रयोग करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता में कृषि संबंधी कार्य (फसल काटने) हेतु संभवतः पत्थर (प्रस्तर) के हँसियों का उपयोग किया जाता था।
- हड़प्पा सभ्यता में कृषि की उन्नति के साथ-साथ पशुपालन का भी विकास हुआ था। कृषि संबंधी कार्यों, व्यापार एवं परिवहन में पशुओं की एक मुख्य भूमिका थी। इन पशुओं में कूबड़ वाला बैल, भेड़, बकरी, गाय, हाथी इत्यादि प्रमुख थे।
- हड़प्पा सभ्यता में कूबड़ वाला बैल अपना विशेष महत्त्व रखता था।
- हड़प्पा सभ्यता में घोड़े के अस्थि-पंजर केवल सुरकोटदा (गुजरात) से ही प्राप्त हुए हैं।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोग लोहे एवं तलवार से परिचित नहीं थे।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) में मानकीकृत माप-तौल प्रणाली का प्रचलन था, इसकी इकाई 16 के अनुपात में होती थी तथा इनके बांट दशमलव पद्धति पर आधारित थे। सबसे अधिक प्रचलित बांट 16 मान का होता था।

सामाजिक दशा

हड़प्पाकालीन समाज की इकाई परंपरागत रूप से 'परिवार' को माना जाता है। मुहरों पर अंकित चित्र तथा मातृदेवी की मूर्ति पूजा से यह ज्ञात होता है कि संभवतः हड़प्पाकालीन समाज मातृसत्तात्मक था।

- इस समाज के अंतर्गत मुख्यतः चार वर्गों पुरोहित (विद्वान), योद्धा, व्यापारी एवं श्रमिक की मौजूदगी थी।
- हड़प्पाकालीन समाज में साज-सज्जा पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता था। आभूषणों का प्रयोग स्त्री एवं पुरुष दोनों के द्वारा किया जाता था।
- हड़प्पाकालीन आवासों की संरचना यहाँ के समाज की आर्थिक विषमता को दर्शाती है।
- हड़प्पाकालीन समाज के लोग शाकाहारी एवं माँसाहारी दोनों प्रकार का भोजन करते थे।
- हड़प्पाकालीन समाज के लोग युद्धप्रिय कम व शांतिप्रिय अधिक थे।
- हड़प्पाकालीन समाज के लोग सूती एवं ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का उपयोग करते थे।
- हड़प्पाकालीन समाज के लोगों के मनोरंजन के साधन पासे का खेल, पशुओं की लड़ाई एवं नृत्य इत्यादि थे।
- हड़प्पा से आंशिक शवाधान, मोहनजोदड़ो से कलश शवाधान एवं कालीबंगा से प्रतीकात्मक शवाधान के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- हड़प्पा में शवों को दफनाने की प्रथा एवं मोहनजोदड़ो में शवों को जलाने की प्रथा विद्यमान थी।

धार्मिक दशा

- माना जाता है कि मूर्ति पूजा का प्रारंभ सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) से ही हुआ है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोग धरती (पृथ्वी) को उर्वरता की देवी मानकर उसकी पूजा करते थे।
- हड़प्पाकालीन स्थल कालीबंगा से प्राप्त अग्निकुंड के आधार पर कहा जा सकता है कि इस सभ्यता में अग्नि एवं स्वस्तिक की पूजा की जाती थी। संभवतः स्वस्तिक चिह्न/प्रतीक सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की ही देन है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) से प्राप्त स्वस्तिक एवं चक्र सूर्य पूजा के प्रतीक थे।
- हड़प्पाकालीन स्थल मोहनजोदड़ो एवं कालीबंगा से प्राप्त कुछ मुहरों पर पशुबलि के प्रमाण मिले हैं।
- हड़प्पाकालीन समाज पुनर्जन्म में विश्वास करता था, इसलिए मृत्यु के पश्चात् दाह-संस्कार की तीन विधियाँ प्रचलित थी।
- हड़प्पाकालीन स्थल मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर तीन मुख वाला एक पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा है। इसको पशुपतिनाथ का रूप माना गया है। इस मुहर पर पाँच प्रकार के कुल छह पशु विराजमान है, जोकि

निम्नलिखित हैं- एक हाथी, एक गैंडा, एक बाघ (शेर), एक भैंसा एवं दो बारहसिंगा (हिरण)।

- हड़प्पाकालीन स्थल चन्हूदड़ो से प्राप्त एक मुहर से इस सभ्यता में बलि प्रथा के प्रचलित होने का भी अनुमान मिलता है।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोग तंत्र-मंत्र, जादू-टोना एवं भूत-प्रेत में विश्वास करते थे।
- ऐसा प्रतीत होता है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के लोग मातृदेवी, पशुपतिनाथ, लिंग-योनि, पशु, पक्षी, वृक्ष इत्यादि की पूजा करते थे। सबसे अधिक पूजा मातृदेवी की होती थी।
- मूर्ति की पूजा, नटराज के रूप में शिव की पूजा, पीपल की पूजा, जल की पवित्रता, अग्नि की पूजा (यज्ञ), वृषभ तथा अनेक पशुओं का देवताओं से संबंध इत्यादि तत्व भारतीय धार्मिक जीवन में सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) से लिए गए हैं।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के किसी भी स्थल पर मंदिर होने के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं, लेकिन बनावली (हरियाणा) में मिले एक भवन से मंदिर के होने का केवल अनुमान ही लगाया जाता है।
- माना जाता है कि इस सभ्यता में पीपल सबसे पवित्र वृक्ष एवं बत्तख (फाख़्ता) सबसे पवित्र पक्षी था।

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के पतन के प्रमुख कारण

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का क्रमिक रूप से पतन हुआ था, यह सभ्यता अपने नगरीय स्वरूप से ग्रामीण स्वरूप में पहुँच गई थी। इस सभ्यता की उत्पत्ति के समान ही इसके पतन हेतु कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं था। इस सभ्यता के प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि अपने अंतिम समय में यह सभ्यता पतनोन्मुख रही।

सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की प्रमुख देन

- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) की एक प्रमुख देन नगरीय जीवन के क्षेत्र में थी। पूर्ण रूप से विकसित एक नगरीय जीवन का सूत्रपात इसी सभ्यता से हुआ था।
- सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) में प्रचलित अनेक वस्तुएँ ऐतिहासिक काल में भी निरंतर रही, जोकि निम्नलिखित हैं- सुनियोजित नगर नियोजन, दशमलव पद्धति पर आधारित माप-तौल प्रणाली, सड़कों तथा नालियों की उचित व्यवस्था, आंतरिक तथा बाह्य व्यापार, बहुफसली कृषि व्यवस्था, मातृदेवी की पूजा, प्रकृति की पूजा, अग्नि की पूजा (यज्ञ), शिव की पूजा, लिंग-योनि की पूजा, जल की पवित्रता, योगाभ्यास, आभूषणों का प्रयोग, मुहरों का प्रयोग, इक्कागाड़ी तथा बैलगाड़ी इत्यादि।

3 वैदिक सभ्यता

वैदिक सभ्यता एक प्राचीन भारतीय सभ्यता है। वैदिक सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के पश्चात् अस्तित्व में आई थी। सामान्यतः ऐसा माना गया है कि आर्यों ने सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) के नगरों को ध्वस्त करके वैदिक सभ्यता की नींव रखी थी। वैदिक सभ्यता को 'आर्य सभ्यता' के नाम से भी जाना जाता है। वैदिक सभ्यता मूलतः 'ग्रामीण सभ्यता' थी। वैदिक सभ्यता का ज्ञान वेदों से हुआ अर्थात् वेदों की रचना इसी सभ्यता में हुई।

वैदिक शब्द 'वेद' से निर्मित हुआ है, जिसका अर्थ 'ज्ञान' होता है। मूल रूप से वैदिक सभ्यता के निर्माता 'आर्य' थे। आर्य मूलतः एक भाषायी समूह था। वैदिक सभ्यता में आर्य शब्द गुण का द्योतक है, जिसका अर्थ 'श्रेष्ठ, उत्तम, अभिजात, कुलीन एवं उत्कृष्ट' होता है। सर्वप्रथम प्रो. मैक्समूलर ने वर्ष 1853 में आर्य शब्द का प्रयोग एक श्रेष्ठ जाति के आशय से किया था।

- वैदिक सभ्यता को दो भागों में विभाजित किया गया हैं-
  1. ऋग्वैदिक काल
  2. उत्तरवैदिक काल

ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 ई.पू.)

- सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' की रचना इसी काल में हुई थी। 'ऋग्वेद' इस काल की जानकारी का एकमात्र साहित्यिक स्रोत है। माना जाता है कि 'ऋग्वेद' में वर्णित अनेक बातें ईरानी भाषा के प्राचीनतम ग्रंथ 'जेंद अवेस्ता' से मिलती हैं।
- 1400 ई.पू. के आस-पास के बोगज़कोई (एशिया माइनर) अभिलेख से ऋग्वैदिक काल के देवताओं इन्द्र, वरुण, मित्र एवं नासत्य का विवरण मिलता है। इससे एक अनुमान लगाया जाता है कि वैदिक आर्य भारत में ईरान से होकर आए थे।
- ऋग्वैदिक काल के आर्य घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते थे। इनका मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। इनकी घुमक्कड़ जीवन-शैली होने के कारण इस काल में कृषि का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाया था।
- आर्यों के मूल निवास के संदर्भ में प्रमुख विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं, जोकि निम्नलिखित हैं-

प्रमुख विद्वान	विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास स्थान
प्रो. मैक्समूलर	मध्य एशिया (बैक्ट्रिया)
प्रो. पेंका	जर्मनी के मैदानी भाग (जर्मन स्केण्डेनेविया)
गंगानाथ झा	ब्रह्मर्षि देश
स्वामी दयानंद सरस्वती	तिब्बत
बाल गंगाधर तिलक	उत्तरी ध्रुव
गाइल्स महोदय	हंगरी या डेन्यूब नदी घाटी
डॉ. अविनाश चंद्र दास	सप्त सैंधव प्रदेश
नेहरिंग एवं प्रो. गॉर्डन चाइल्ड	दक्षिणी रूस

नोट:- किन्तु अधिकतर विद्वान प्रो. मैक्समूलर के विचारों से सहमत हैं कि आर्य मूल रूप से मध्य एशिया (बैक्ट्रिया) के निवासी थे।

भौगोलिक विस्तार

- आर्यों के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी का मुख्य स्रोत 'ऋग्वेद' है। इस वेद में आर्यों के निवास स्थल हेतु 'सप्त सैंधव क्षेत्र' का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ 'सात नदियों का प्रदेश' होता है। ये नदियाँ निम्नलिखित हैं- सिन्धु, सरस्वती, शतुद्रि, विपासा, वितस्ता, परुष्णी एवं अस्किनी।

प्रमुख ऋग्वैदिककालीन नदियाँ		
क्र.सं.	प्राचीन नाम (नदी)	आधुनिक नाम (नदी)
1.	सिन्धु	इंडस
2.	शतुद्रि	सतलज
3.	विपासा	व्यास
4.	वितस्ता	झेलम
5.	परुष्णी	रावी
6.	अस्किनी	चिनाब/चेनाब
7.	गोमती	गोमल
8.	सदानीरा	गंडक

- ऋग्वेद से ही प्राप्त एक जानकारी के अनुसार, आर्यों का विस्तार अफगानिस्तान, पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग तक था। सतलज नदी से यमुना नदी तक के क्षेत्र को 'ब्रह्मवर्त' कहा जाता था।
  नोटः- सबसे प्राचीन स्मृति 'मनुस्मृति' में सरस्वती नदी एवं इसकी सहायक दृषद्वती नदी के मध्य के क्षेत्र को 'ब्रह्मवर्त' कहा गया है। इस क्षेत्र को अत्यंत पवित्र माना जाता है। सरस्वती नदी की अन्य सहायक नदी 'आपया' थी।
- आर्यों ने गंगा नदी एवं यमुना नदी के दोआब क्षेत्र तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों पर भी अपना अधिकार कर लिया था, जिसे 'ब्रह्मर्षि देश' कहा गया है। कालांतर में आर्यों ने हिमालय पर्वत से विंध्य पर्वत तक और पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक के समस्त भाग पर भी अपना अधिकार कर लिया था, जिसे 'आर्यावर्त' कहा गया है।
- ऋग्वेद में 'हिमालय पर्वत' तथा इसकी एक चोटी 'मुजवंत' का विवरण मिलता है। 'मुजवंत' सोमरस हेतु प्रसिद्ध थी।
- वैदिक संहिताओं में कुल 31 नदियों का विवरण मिलता हैं, जिनमें से सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' में 25 नदियों का उल्लेख हैं।
  नोटः- ऋग्वेद के दसवें मंडल के नदी सूक्त में केवल 21 नदियों का ही उल्लेख हैं।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के नदी सूक्त में वर्णित प्रथम नदी गंगा तथा अंतिम नदी गोमती है।
- ऋग्वैदिक काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नदी 'सिन्धु' को बताया गया है। सर्वाधिक उल्लेख/वर्णन तथा स्तुति 'सिन्धु नदी' की ही है। इस काल की दूसरी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नदी 'सरस्वती' थी। इस काल की सर्वाधिक पवित्र नदी 'सरस्वती' को बताया गया है। सबसे प्राचीन वेद 'ऋग्वेद' में 'सरस्वती नदी' को 'नदीतमा, मातेतमा, देवितमे एवं अम्बितमे' कहा गया है।
- ऋग्वेद में वर्णित अधिकांश नदियों का प्रवाह गंगा-यमुना के पश्चिमी क्षेत्र में था। ऋग्वेद में गंगा नदी तथा सरयू नदी का एक बार उल्लेख और यमुना नदी का तीन बार उल्लेख मिलता है।

राजनीतिक स्थिति

- ऋग्वैदिक काल का समाज कबीलाई व्यवस्था पर आधारित था। ऋग्वैदिक काल के लोग कबीलों एवं जनों में विभाजित थे। ऋग्वेद में राजा कबीले का प्रधान था। ऋग्वेद में राजा को कबीले का संरक्षक (गोपा जनस्य/गोप्ता जनस्य) कहा गया है। ऋग्वैदिक काल में राजा हेतु गोप शब्द का प्रयोग हुआ है। ऋग्वैदिक काल में राजा का पद आनुवंशिक हो गया था, लेकिन राजा को केवल सीमित अधिकार ही प्राप्त थे। इस काल में एक समिति को राजा को चुनने एवं उसको पदच्युत करने का अधिकार प्राप्त था। इस काल में राजा युद्ध का स्वामी होता था, भूमि का स्वामी नहीं। भूमि का स्वामित्व जनता में निहित होता था।
  नोटः- ऋग्वेद में राजा को नगरों पर विजय प्राप्त करने वाला (पुराभेत्ता) कहा गया है।
- ऋग्वैदिक काल में राज्य का मूल आधार कुल/परिवार होता था। इस कुल अर्थात् परिवार का प्रधान 'कुलप/गृहपति' कहलाता था। कई कुलों के समूह को मिलाकर एक ग्राम का निर्माण होता था, जिसका प्रधान 'ग्रामणी' कहलाता था। कई गाँवों के समूह को मिलाकर एक विश का निर्माण होता था, जिसका प्रधान 'विशपति' कहलाता था। कई विशों के समूह को मिलाकर एक जन का निर्माण होता था, जिसका प्रधान 'जनपति' कहलाता था।
  नोटः- ऋग्वेद में ग्राम सामान्यतः स्वजनों के एक समूह को इंगित करता था, एक गाँव को नहीं।
- ऋग्वेद में जन शब्द का उल्लेख सर्वाधिक बार हुआ है। पृथ्वी तथा राजा शब्द का उल्लेख एक बार हुआ है, जबकि जनपद शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं हुआ है।
- ऋग्वेद के सातवें मंडल में परुष्णी (आधुनिक नाम - रावी) नदी के तट पर लड़े गए दशराज्ञ युद्ध का वर्णन है। दशराज्ञ युद्ध भरत वंश के राजा सुदास एवं अन्य 10 राजाओं (पाँच आर्य तथा पाँच अनार्य) के मध्य हुआ था। दशराज्ञ युद्ध में भरत वंश के राजा सुदास की विजय हुई थी। दशराज्ञ युद्ध में भरत वंश के राजा सुदास के पुरोहित 'वशिष्ठ' थे।
- ऋग्वैदिक काल में आर्यों की प्रशासनिक इकाइयाँ पाँच भागों में विभाजित थी। इस काल में ही कई जनतांत्रिक संगठनों अथवा सभाओं का विकास हुआ था, जिनमें से सभा, समिति एवं विदथ प्रमुख हैं। इनमें राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक प्रश्नों पर चर्चाएँ होती थी।
- ये संगठन/संस्थाएँ राजा की शक्तियों पर नियंत्रण रखने के साथ-साथ उसको (राजा को) परामर्श भी देते थे। सभा वृद्ध तथा अभिजात लोगों की एक संस्था थी। सभा को मंत्रिपरिषद् भी कहा जाता है। समिति सामान्य जनता की एक प्रतिनिधि सभा थी। समिति राजा पर नियंत्रण रखती थी। समिति केंद्रीय राजनीतिक संस्था कहलाती थी। सभा एवं समिति राजा को सलाह देने वाली संस्थाएँ थी। आर्यों की सबसे प्राचीन संस्था विदथ थी। माना जाता है कि विदथ में कबीलाई तत्वों की प्रमुखता थी। ऋग्वेद में विदथ का उल्लेख सर्वाधिक बार हुआ है। ऋग्वैदिक काल में महिलाएँ भी राजनीति में भाग लेती थी।
- ऋग्वैदिक काल में 'बलि' एक प्रकार का कर था, जो स्वेच्छा से प्रजा के द्वारा अपने राजा को दिया जाता था। राजा इस कर के बदले अपनी प्रजा की सुरक्षा की जिम्मेदारी का निर्वहन करता था। राजा के पास स्थायी रूप से सेना नहीं होती थी, लेकिन युद्ध के समय राजा नागरिकों के रूप में सेना का संगठन कर लेता था।

आर्थिक स्थिति

- ऋग्वैदिक काल में आर्यों के प्रमुख व्यवसाय क्रमशः पशुपालन एवं कृषि थे। ऋग्वेद के चौथे मंडल में कृषि से संबंधित कार्यों का उल्लेख हैं। इस काल में कृषि योग्य भूमि (उपजाऊ भूमि) को 'उर्वरा' कहा जाता था। उर्दर शब्द का अर्थ 'अनाज मापने का यंत्र/अन्न मापक बर्तन' है। धान्य शब्द का अर्थ 'अनाज' है। ऋग्वेद में केवल एक ही अनाज जौ (यव) का उल्लेख है।
  नोटः- ऋग्वेद में चावल, कपास एवं नमक का कहीं पर भी उल्लेख

नहीं है।

- ऋग्वैदिक काल में गाय को पवित्र पशु माना जाता था। मुख्यत: गाय एवं पशु आर्यों का मुख्य आर्थिक आधार/संपत्ति थे। इस काल में गाय और घोड़े विनिमय के एक माध्यम के रूप में थे। आर्यों की अधिकांश लड़ाइयाँ मुख्य रूप से गायों के लिए ही होती थी। इस काल में गाय को अष्टकर्णी और न मारे जाने योग्य पशु (अघन्या) कहा गया है। गाय को मारने या घायल करने वालों के लिए वेदों में मृत्युदंड या उन्हें देश से निकालने की व्यवस्था थी। आर्यों का अति उपयोगी पशु 'घोड़ा' था। इस काल में बैल, बकरी, ऊँट आदि अन्य उपयोगी पशु भी थे। इस काल में 'पणि' मवेशियों (पशुओं) के चोर होते थे।
- ये (पणि) व्यापार भी करते थे। मुख्य रूप से व्यापार पर इन्हीं लोगों का अधिकार था। सामान्यत: व्यापार वस्तु-विनिमय के माध्यम से होता था। वस्तु-विनिमय के माध्यम के रूप में निष्क (स्वर्ण आभूषण/सोने का टुकड़ा) का भी विवरण मिलता है।

  नोट:- 'अष्टकर्णी' नाम से यह विदित होता है कि ऋग्वैदिक आर्यों को संभवत: अंकों के बारे में भी जानकारी थी।
- वेकनाट/बेकनाट (सूदखोर) ऐसे ऋणदाता थे, जो बहुत अधिक ब्याज वसूल करते थे। इस काल में उधार लिए गए ऋण हेतु 'कुसीद' एवं उधार देने के कार्य को 'कुसीदवृत्ति' कहा गया है।
- ऋग्वैदिक काल के लोग लोहे से परिचित नहीं थे। ऋग्वेद में अयस् शब्द का प्रयोग संभवत: ताँबे और काँसे के लिए हुआ है।
- ऋग्वेद में बढ़ई, बुनकर, रथकार, कुम्हार एवं चर्मकार इत्यादि शिल्पियों के विवरण मिलते हैं।

सामाजिक स्थिति

- ऋग्वैदिक काल में समाज पितृसत्तात्मक था अर्थात् पुत्र पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी होता था। पितृसत्तात्मक समाज होने के बावजूद भी इस काल में नारी को यथोचित सम्मान प्राप्त था। इस काल में समाज की आधारभूत इकाई कुल/परिवार थी। इस कुल अर्थात् परिवार का प्रधान 'पिता' होता था, जिसे 'कुलप/गृहपति' कहा जाता था। इस काल में सामाजिक संगठन का मुख्य आधार गोत्र अथवा जन्ममूलक था। इस काल में संयुक्त परिवार की प्रथा भी प्रचलित थी।
- ऋग्वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था का प्रचलन था। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में विराट पुरुष के द्वारा चारों वर्णों की उत्पत्ति का उल्लेख हैं। इसके अनुसार माना जाता है कि ब्राह्मण वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष के मुख से, क्षत्रिय वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष की भुजाओं से, वैश्य वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष की जाँघों से तथा शूद्र वर्ण की उत्पत्ति विराट पुरुष के पैरों से हुई है। ऋग्वेद में वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी, जन्म आधारित नहीं।

  नोट:-

  1. ब्राह्मण तथा शूद्र शब्दों का उल्लेख ऋग्वेद में केवल एक बार ही हुआ है।

  2. ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में शूद्र का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है।

  3. वैश्य शब्द का प्रयोग केवल पुरुष सूक्त में ही हुआ है।
- ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ (पत्नियाँ) अपने पति के साथ धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थी। इस काल में स्त्रियाँ भी वैदिक शिक्षा ग्रहण करती थी। ऋग्वेद में पत्नी को **"जायेदस्तम् अर्थात् गृहिणी (पत्नी) ही गृह है"** कहा गया है। इस काल में स्त्रियों को संपत्ति में तथा राजनीति में कोई विशेष अधिकार प्राप्त नहीं था। इस काल में स्त्रियाँ युद्ध में भाग लेती थी।
- ऋग्वेद में अपाला, घोषा, इन्द्राणी, सिकता, निवावरी, लोपामुद्रा तथा विश्ववारा/विश्वारा आदि विदुषी स्त्रियों का उल्लेख है।
- ऋग्वैदिक काल में दास प्रथा का प्रचलन था। अन्य प्रथाओं **जैसे-** बाल विवाह, तलाक प्रथा, पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। इस काल में विवाह में दहेज जैसी कुप्रथा भी प्रचलित नहीं थी, लेकिन कन्या की विदाई के समय उसको दिए जाने वाले उपहार को 'वहतु' कहते थे। इस काल में आजीवन अविवाहित रहने वाली कन्या 'अमाजू' कहलाती थी। इस काल में पुत्री का भी उपनयन संस्कार होता था।
- ऋग्वैदिक काल के समाज में दो प्रकार के विवाह प्रचलित थे-
  1. अनुलोम विवाह
  2. प्रतिलोम विवाह

धार्मिक स्थिति

- प्रकृति के प्रतिनिधि के रूप में ऋग्वैदिक आर्यों के देवताओं को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था-
  1. आकाश के देवता (सूर्य, उषा, वरुण, मित्र, पूषन/पूषण, अश्विन, द्यौस इत्यादि।)
  2. अंतरिक्ष के देवता (इन्द्र, रुद्र, वायु, पर्जन्य, मरुत इत्यादि।)
  3. पृथ्वी के देवता (पृथ्वी, अग्नि, सोम, सरस्वती, बृहस्पति इत्यादि।)

  नोट:-

  1. ऋग्वैदिक काल में समस्त देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे। ऋग्वैदिक काल के लोग इनकी पूजा प्रकृति के प्रकोप को कम करने के लिए करते थे।

  2. ऋग्वैदिक काल में कहीं पर भी मूर्ति पूजा का उल्लेख नहीं मिलता है।
- ऋग्वेद में अनेक देवताओं का अस्तित्व मिलता है, लेकिन देवियों के अस्तित्व का अभाव मिलता है।
- नदी की देवी सरस्वती थी, जो कालांतर में विद्या की देवी बनी।
- ऋग्वेद में इन्द्र को पुरंदर कहा गया है। इन्द्र आर्यों के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देवता थे। ऋग्वेद के दूसरे मंडल में 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित हैं। इन्द्र को वर्षा का देवता माना गया है। इन्द्र का आह्वान भौतिक सुख तथा विजय हेतु होता था।
- आर्यों के दूसरे महत्त्वपूर्ण देवता अग्नि थे, जिन्हें 200 सूक्त समर्पित हैं। अग्नि के माध्यम से देवताओं को आहुतियाँ दी जाती थी। अग्नि मानव तथा देवताओं के बीच मध्यस्थता स्थापित करने का कार्य करता था।
- आर्यों के तीसरे महत्त्वपूर्ण देवता वरुण थे, जिन्हें 30 सूक्त समर्पित हैं। वरुण नदी, जल तथा समुद्र के देवता थे अर्थात् वरुण जलनिधि के प्रतिनिधित्वकर्ता थे। वरुण को 'ऋतस्य गोपा' भी कहा गया है। वरुण प्राकृतिक घटनाओं तथा ऋत् (नैतिक व्यवस्था) का संरक्षक/संयोजक था।
- पूषन/पूषण ऋग्वैदिक काल में पशुओं के देवता थे, जो कालांतर में शूद्रों के देवता बने।
- सोम पेय पदार्थ के देवता थे। ऋग्वेद का नौवाँ मंडल सोम देवता को समर्पित है।
- सूर्य का दूसरा रूप प्रकाश के देवता सवितृ है। गायत्री मंत्र सवितृ देवता को समर्पित है। ऋग्वेद के तीसरे मंडल में गायत्री मंत्र का उल्लेख है। गायत्री मंत्र के रचनाकार विश्वामित्र है।

उत्तरवैदिक काल (1000 - 600 ई.पू.)

- उत्तरवैदिक काल के अध्ययन हेतु सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोतों में प्रमुखत: यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक तथा उपनिषद् हैं। इन सभी की रचनाएँ इसी काल में हुई थी।
- उत्तरवैदिक काल के अध्ययन हेतु चित्रित धूसर मृद्भांड भी एक महत्त्वपूर्ण साक्ष्य है।
- उत्तरवैदिक काल में धर्म, दर्शन, नीति, आचार-विचार इत्यादि की प्रधान रूपरेखा सुनिश्चित तथा सुस्पष्ट हो गई थी।

भौगोलिक विस्तार

उत्तरवैदिक काल में आर्य सभ्यता के लोगों का प्रमुख केंद्र मध्य देश था, जो सरस्वती नदी से गंगा-यमुना नदियों के दोआब क्षेत्र तक विस्तृत था।

- उत्तरवैदिक काल के अंतिम चरण में आर्य सदानीरा (आधुनिक नाम-गंडक) नदी तक विस्तृत हो गए थे।
- उत्तरवैदिक काल के अंतिम चरण में आर्य लोग कोसल/कोशल, विदेह तथा अंग राज्यों से परिचित हो गए थे।
- यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में उत्तरवैदिककालीन नदियों रेवा (नर्मदा) तथा सदानीरा (गंडक) का उल्लेख मिलता है।
- उत्तरवैदिककालीन ग्रंथों में त्रिककुद नामक एक पर्वत शृंखला का विवरण मिलता है।

राजनीतिक स्थिति

उत्तरवैदिक काल में जीवन में कृषि के कारण आए स्थायित्व के कारण ऋग्वैदिक काल के छोटे-छोटे कबीले एक-दूसरे में विलीन होकर बड़े जनपदों का रूप ले रहे थे और राजा अब एक बड़े प्रदेश पर शासन करने लगा था।

- उत्तरवैदिक काल में सर्वप्रथम क्षेत्रीय प्रदेशों का उदय हुआ था। उत्तरवैदिक काल में प्रदेश के सूचक के रूप में राष्ट्र शब्द बहुप्रचलित हुआ था।
- उत्तरवैदिक काल में शासन-व्यवस्था का प्रमुख आधार राजतंत्र था। उत्तरवैदिक काल में राज्य के आकार में वृद्धि होने से राजा का महत्त्व अधिक हो गया था एवं उसके (राजा के) अधिकार भी बढ़ गए थे।
- प्रारंभ में पांचाल एक कबीले का नाम था, लेकिन उत्तरवैदिक काल में पांचाल सर्वाधिक विकसित राज्य था।
- उत्तरवैदिक काल में सभा एवं समिति आदि प्रतिनिधि संस्थाओं का वर्चस्व कम हो गया था। इस काल में सभा एवं समिति अपने-अपने स्थान पर बनी तो रही लेकिन इन दोनों संस्थाओं का स्वरूप परिवर्तित हो गया था। उत्तरवैदिक काल में विदथ संस्था का उल्लेख कहीं पर भी नहीं मिलता है।

  नोट:-

  1. अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।
  2. अथर्ववेद में सभा को नरिष्ठा भी कहा गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ अनुल्लंघनीय होता है।
- ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में राजा की दैवी उत्पत्ति का सिद्धांत मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में सर्वप्रथम राज्याभिषेक की परंपरा प्रारंभ हुई थी। यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में राजा के राज्याभिषेक का उल्लेख मिलता है। इस काल में राजा के राज्याभिषेक का अनुष्ठान राजसूय यज्ञ के द्वारा संपन्न होता था। यजुर्वेद में राज्य के उच्च पदाधिकारियों को रत्नी (रत्निन) कहा गया है।
- यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में राजा सहित 12 रत्निनों के नामों का विवरण मिलता है। रत्नी (रत्निन) राजा के राज्याभिषेक के समय पर उपस्थित होते थे तथा राजा इस (राज्याभिषेक के) समय पर इन रत्निनों के घर भी जाता था।

  नोट:-

  1. रत्नी (रत्निन) राजसूय यज्ञ से संबंधित हैं तथा शुक्ल यजुर्वेद में राजसूय यज्ञ से संबंधित अनुष्ठानों का विवरण मिलता है। राजसूय यज्ञ के समय 'सोमरस' पिया जाता था।
  2. सामवेद के पंचविंश ब्राह्मण में 12 रत्निनों को 'वीर' कहा गया है।
- उत्तरवैदिक काल में अश्वमेध यज्ञ राजकीय यज्ञों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा एक प्रसिद्ध यज्ञ था। अश्वमेध यज्ञ राजा की शक्ति का प्रतीक था, इसमें राजा अपने साम्राज्य की सीमा में वृद्धि हेतु स्वतंत्र रूप से एक घोड़ा छोड़ता था। यह घोड़ा जिन प्रदेशों से बिना किसी विरोध के गुजरता था तो ऐसे प्रदेश राजा के अधीन माने जाते थे। यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में अश्वमेध यज्ञ का विवरण मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में वाजपेय यज्ञ में राजा के द्वारा अपनी शक्ति के प्रदर्शन हेतु रथों की दौड़ का आयोजन किया जाता था। इसके अंतर्गत राजा को सहभागियों के द्वारा विजयी बनाया जाता था।

  नोट:-

  1. ऐतरेय ब्राह्मण में विभिन्न क्षेत्रों के शासकों की शासन-व्यवस्था का विवरण मिलता है।
  2. गोपथ ब्राह्मण में शासकों हेतु निर्धारित यज्ञ का विवरण मिलता है।
- वैराज्य ऐसे राज्य होते थे जहाँ पर राजा नहीं होता था। यहाँ पर जनता अपना शासन स्वयं करती थी।
- उत्तरवैदिक काल में एक नियमित कर प्रणाली विकसित हो चुकी थी। इस काल में ऋग्वैदिककालीन कर 'बलि' नियमित हो गया था। अथर्ववेद के अनुसार राजा को आय का 1/16वाँ भाग प्राप्त होता था।
- उत्तरवैदिक काल में भी राजा के पास अपनी कोई स्थायी सेना नहीं होती थी।

ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित शासन-व्यवस्था

प्रमुख क्षेत्र	शासन	मुख्य उपाधि
पूर्व	साम्राज्य	सम्राट
पश्चिम	स्वराज्य	स्वराट
उत्तर	वैराज्य	विराट
दक्षिण	भोज्य	भोज
मध्य देश	राज्य	राजा

आर्थिक स्थिति

- उत्तरवैदिक काल में आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में कृषि से संबंधित चारों क्रियाओं **(जुताई, बुआई, कटाई एवं मड़ाई)** का विवरण मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में लोहे से निर्मित उपकरणों के प्रयोग ने कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया था। लौह-निर्मित उपकरणों के प्रयोग से कृषि के क्षेत्र में विस्तार हुआ तथा इसके साथ-साथ फसलों की संख्या में भी वृद्धि हुई थी। इस काल का सबसे बड़ा लौह-पुंज अतरंजीखेड़ा (जनपद - एटा, उत्तर प्रदेश) से प्राप्त हुआ है।

  नोट:- उत्तरवैदिक काल में यजुर्वेद में लोहे हेतु श्याम अयस्/कृष्ण अयस् शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- उत्तरवैदिक काल के लोग लोहे, टिन, ताँबे, चाँदी, सोना एवं सीसा इत्यादि धातुओं से परिचित हो गए थे। अथर्ववेद में चाँदी का उल्लेख मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में निष्क, शतमान, पाद, कृष्णल, रत्ती/रत्तिका एवं गुंजा

इत्यादि माप-तौल की इकाइयाँ थी। निष्क, जो ऋग्वैदिक काल में एक स्वर्ण आभूषण था, उसको अब एक स्वर्ण मुद्रा के रूप में माना जाने लगा था। शतमान, चाँदी की एक मुद्रा थी।

- उत्तरवैदिक काल में आर्यों की मुख्य फसल क्रमशः चावल (धान) एवं गेहूँ थी। यजुर्वेद में चावल (धान) का उल्लेख 'ब्रीहि' नाम से हुआ है। इस काल में कहीं-कहीं पर चावल (धान) को 'तंदुल' भी कहा गया है। गेहूँ के लिए गोधूम शब्द का प्रयोग किया गया है।
- उत्तरवैदिक काल में कपास का उल्लेख कहीं पर भी नहीं मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में चार प्रकार के बर्तन (मृद्भांड) प्रचलन में थे-
  1. काले (कृष्ण) एवं लाल रंग मिश्रित बर्तन (मृद्भांड)
  2. काले (कृष्ण) बर्तन (मृद्भांड)
  3. लाल बर्तन (मृद्भांड)
  4. चित्रित धूसर बर्तन (मृद्भांड)
- उत्तरवैदिक काल की विशेषता चित्रित धूसर बर्तन (मृद्भांड) थी, जबकि लाल बर्तन (मृद्भांड) सबसे ज्यादा प्रचलन में थे।
- वैदिक ग्रंथों में वर्णित नील लोहित काले (कृष्ण) एवं लाल भांड हैं।
- उत्तरवैदिक भारत की प्राचीनतम लौह-युगीन बस्तियाँ वैदिककालीन चित्रित धूसर मृद्भांड से संबंधित हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में श्रेष्ठिन का उल्लेख मिलता है, व्यापारिक श्रेणी के प्रधान को श्रेष्ठिन कहा जाता था।
- उत्तरवैदिक काल के ग्रंथों से ही सर्वप्रथम भूमिदान का उल्लेख मिलता है। इस काल में ही भूमि पर व्यक्तिगत अधिकार (मालिकाना हक) की भावना मजबूत हुई थी।
- उत्तरवैदिक काल के लोगों को समुद्र का ज्ञान हो गया था। वैदिक ग्रंथों में समुद्र-यात्रा का भी विवरण मिलता है।
- प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में तीन ऋणों **(ऋषि, पितृ एवं देव)** से छुटकारा पाना होता था। एक व्यक्ति का जीवन तभी सफल माना जाता था, जब वह इन तीन ऋणों से छुटकारा पा लेता था।

सामाजिक स्थिति

- उत्तरवैदिक काल में वर्ण व्यवस्था में कठोरता आने लगी थी। इस काल में व्यवसाय भी आनुवंशिक होने लगे थे।
- उत्तरवैदिक काल में समाज चार भागों में विभाजित हो गया था-
  1. ब्राह्मण
  2. क्षत्रिय
  3. वैश्य
  4. शूद्र
- उत्तरवैदिक काल में समाज पितृसत्तात्मक था। इस काल में सामाजिक व्यवस्था का मुख्य आधार वर्णाश्रम व्यवस्था ही था।
- सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में चारों वर्णों के कर्त्तव्यों का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में चारों वर्णों की अत्येष्टि हेतु चार प्रकार के टीलों का विवरण मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य वर्ण ही उपनयन संस्कार के अधिकारी होते थे। इन तीनों को ही 'द्विज' कहा जाता था। चौथे तथा अंतिम वर्ण शूद्र को उपनयन संस्कार का अधिकारी नहीं माना गया था।

  नोटः- उपनयन संस्कार में यज्ञोपवीत धारण किया जाता था।
- उत्तरवैदिक काल में यज्ञों तथा कर्मकांडों का प्रचलन अधिक हो गया था, जिसके फलस्वरूप ब्राह्मणों की शक्ति में अत्यधिक वृद्धि दर्ज हुई थी।
- उत्तरवैदिक काल में केवल वैश्य वर्ण ही कर चुकाता था। ब्राह्मण एवं क्षत्रिय वर्ण वैश्यों के द्वारा दिए गए कर पर निर्भर रहते थे।

  नोटः- शतपथ ब्राह्मण में वैश्य को दूसरे को बलि देने वाला (अन्यस्य बलिकृत) कहा गया है।
- चौथे तथा अंतिम वर्ण शूद्र का मुख्य कार्य अन्य तीनों वर्णों **(ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य)** की सेवा करना था।
- उत्तरवैदिक काल में गोत्र/गौत्र प्रथा की स्थापना हुई थी, लेकिन गोत्र/गौत्र शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है।
- उत्तरवैदिक काल में छान्दोग्य उपनिषद् में सर्वप्रथम तीन आश्रमों **(ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ)** का विवरण मिलता है।

  नोटः- जाबालोपनिषद् में सर्वप्रथम चारों आश्रमों **(ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास)** का विवरण मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट दर्ज की गई थी। इस काल में स्त्रियों हेतु उपनयन संस्कार प्रतिबंधित हो गया था।
- ऐतरेय ब्राह्मण में पुत्री को 'कृपण' कहा गया है एवं पुत्री को 'समस्त दु:खों का स्रोत' भी माना गया है।

  नोटः-
  1. अथर्ववेद में एक पुत्री के जन्म लेने पर खिन्नता प्रकट की गई है।
  2. अथर्ववेद में कन्याओं हेतु ब्रह्मचर्य आश्रम के पालन का स्पष्ट रूप से उल्लेख है।
- शतपथ ब्राह्मण में गार्गी, मैत्रेयी जैसी कई विदुषी कन्याओं का विवरण मिलता है।
- सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति में महिलाओं की संपत्ति के अधिकार के संबंध में जानकारी मिलती है।
- सर्वप्रथम गृहसूत्रों में संस्कारों का विवेचन मिलता है। प्रायः समस्त धर्मशास्त्रकार संस्कारों की कुल संख्या 16 मानते हैं।
- सबसे प्राचीन स्मृति 'मनुस्मृति' में विवाह के कुल आठ प्रकारों का विवरण मिलता है। इन आठ प्रकार के विवाहों में 'ब्रह्म विवाह' सबसे आदर्श था। वर्तमान समय में भी अधिकांश विवाह 'ब्रह्म विवाह' ही होते हैं। 'ब्रह्म विवाह' के अंतर्गत एक कन्या के वयस्क होने पर उसके माता-पिता के द्वारा उसके लिए योग्य वर खोजकर, उससे अपनी कन्या का विवाह करना था।

धार्मिक स्थिति

- उत्तरवैदिक काल में वर्ण व्यवस्था एक कठोर रूप धारण कर चुकी थी, जिसके कारण कुछ वर्णों के अपने अलग देवता भी हो गए थे। पूषन/पूषण जो ऋग्वैदिक काल में पशुओं के देवता थे, अब उत्तरवैदिक काल में शूद्रों के देवता हो गए थे।
- उत्तरवैदिक काल में धार्मिक अनुष्ठानों एवं कर्मकांडों में वृद्धि हुई थी। उत्तरवैदिक काल में कर्मकांडों का मूल उद्देश्य भौतिक सुखों की प्राप्ति करना था।
- उत्तरवैदिक काल में ऋग्वैदिककालीन दो सबसे बड़े देवता इन्द्र तथा अग्नि का महत्त्व कम हो गया था, अब प्रजापति (सृष्टि के निर्माता) को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ था। रुद्र तथा विष्णु इस काल के अन्य प्रमुख देवताओं के रूप में प्रतिष्ठित हुए थे।
- उत्तरवैदिक काल में मूर्ति पूजा के प्रारंभ होने का आभास मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में यज्ञों में अधिक पुरोहितों की आवश्यकता होने लगी थी। इस काल में प्रत्येक संहिता (वेद) के अपने पुरोहित हो गए थे, जोकि निम्नलिखित हैं-

वेद	पुरोहित

ऋग्वेद	होता (होतृ)
यजुर्वेद	अध्वर्यु
सामवेद	उद्गाता/उद्गात्रि
अथर्ववेद	ब्रह्मा

- उत्तरवैदिक काल में षड्दर्शनों (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत) का बीजारोपण हुआ था।

प्रमुख दर्शन एवं मुख्य प्रवर्तक	
प्रमुख दर्शन	**मुख्य प्रवर्तक**
सांख्य	कपिल मुनि
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
वैशेषिक	कणाद या उलूक
पूर्व मीमांसा	जैमिनी
उत्तर मीमांसा	बादरायण
चार्वाक	चार्वाक

नोट:- मीमांसा को 'पूर्व मीमांसा' तथा वेदांत को 'उत्तर मीमांसा' के नाम से भी जाना जाता है।

- उत्तरवैदिक काल के बहुदेववाद और कर्मकांडों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उपनिषदों में स्पष्ट रूप से यज्ञों एवं कर्मकांडों की निंदा की गई है। उपनिषदों में ब्रह्म को ही एकमात्र सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है।

उत्तरवैदिक काल में दो महाकाव्य थे, जोकि निम्नलिखित हैं-

1. महाभारत (पुराना नाम - जयसंहिता)
2. रामायण

नोट:- महाभारत विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

4 सोलह महाजनपद तथा मगध साम्राज्य का उत्कर्ष

महाजनपद	**राजधानी**
अवंति	❒ उत्तरी अवंति - उज्जयिनी ❒ दक्षिणी अवंति - महिष्मती
अंग	चंपा
अश्मक	पोटन या पोटली **(दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद)**
चेदि/चेति	सोत्थिवती/शुक्तिमति
गांधार	तक्षशिला
काशी	वाराणसी
कोसल/कोशल	श्रावस्ती/अयोध्या
कुरु	इन्द्रप्रस्थ
कंबोज	राजपुर/हाटक
मगध	राजगृह/गिरिब्रज (दक्षिणी बिहार)
मल्ल	कुशीनगर एवं पावा
मत्स्य	विराट नगर
पांचाल	❒ उत्तरी पांचाल - अहिच्छत्र ❒ दक्षिणी पांचाल - कांपिल्य
सूरसेन/शूरसेन	मथुरा
वज्जि (वृजि)	वैशाली (उत्तरी बिहार)
वत्स	कौशांबी

सोलह महाजनपद

- प्रारंभिक भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ईसा पूर्व को एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल माना जाता है। इस काल को प्रायः आरंभिक राज्यों, नगरों, लोहे के बढ़ते प्रयोग तथा सिक्कों के विकास के साथ जोड़ा जाता है। माना जाता है कि भारत के राजनीतिक इतिहास का प्रारंभ छठी शताब्दी ईसा पूर्व से हुआ है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में लोहे के व्यापक रूप से प्रयोग के कारण कृषि तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तन आया था। इन परिवर्तनों के कारण ही ऋग्वैदिक कबीलाई जन-जीवन में दरार पड़ने लगी तथा क्षेत्रीय भावना के जाग्रत होने से नगरों के निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। परिणामस्वरूप उत्तरवैदिक काल के जनपद महाजनपद में परिवर्तित होने लगे।
- महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी। गौतम बुद्ध के जन्म से पूर्व ही इन 16 महाजनपदों का निर्माण हो चुका था। बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तरनिकाय' तथा जैन ग्रंथ 'भगवती सूत्र' में 16 महाजनपदों के नाम का विवरण मिलता है।

  नोट:- बौद्ध ग्रंथ 'महावस्तु' में भी 16 महाजनपदों की सूची मिलती है।
- 16 महाजनपदों में से 10 महाजनपद गंगा घाटी में स्थित थे।
- प्रत्येक महाजनपद की राजधानी होती थी जिसे प्रायः किले से घेरा जाता था।
- 16 महाजनपदों में से 14 में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी, जबकि 2 **(वज्जि तथा मल्ल)** में गणतंत्रात्मक व्यवस्था थी।
- 16 महाजनपदों में से अश्मक ही एकमात्र ऐसा महाजनपद था, जो गोदावरी नदी के तट पर दक्षिण भारत में स्थित था।
- 16 महाजनपदों में से 4 सबसे शक्तिशाली महाजनपद **(मगध, कोसल/कोशल, वत्स एवं अवंति)** थे।
- छठी से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध (आधुनिक बिहार) महाजनपद सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया था।
- महापरिनिर्वाण सूत्र में 6 महानगरों का विवरण मिलता है, जोकि निम्नलिखित हैं-

  1. चंपा 2. काशी
  3. कौशांबी 4. राजगृह
  5. साकेत 6. श्रावस्ती

गौतम बुद्ध के समय गणतंत्र/बौद्ध साहित्य में वर्णित गणतंत्र

- बुद्ध काल में 16 महाजनपदों के अतिरिक्त गंगा घाटी में अनेक गणतंत्रों के अस्तित्व के प्रमाण प्राप्त होते हैं।
- गौतम बुद्ध के समय में गणतंत्रों की कुल संख्या 10 थी, जोकि निम्नलिखित हैं-

  1. कपिलवस्तु के शाक्य
  2. सुमसुमार पर्वत/सुमसुमगिरी के भग्ग